



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1

PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 339]

नई दिल्ली, शुक्रवार, दिसम्बर 22, 2017/पौष 1, 1939

No. 339]

NEW DELHI, FRIDAY, DECEMBER 22, 2017/PAUSHA 1, 1939

वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय

(वाणिज्य विभाग)

(पाटनरोधी एवं संबद्ध शुल्क महानिदेशालय)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 22 दिसम्बर, 2017

विषय : चीन जन. गण. के मूल के अथवा वहां से निर्यातित आफ्लोक्सेसिन के आयातों से संबंधित पाटनरोधी शुल्क संबंधी जांच

क. मामले की पुष्टभूमि

फा. सं. 14/06/2016-डीजीएडी.—1. मै. आरती ड्रग्स लि. (जिसे आगे याचिकाकर्ता कहा गया है) ने समय-समय पर यथासंशोधित सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 (जिसे आगे अधिनियम भी कहा गया है) और समय-समय पर यथासंशोधित सीमाशुल्क टैरिफ (पाटित वस्तुओं की पहचान, उन पर पाटनरोधी शुल्क का आकलन और संग्रहण तथा क्षतिनिर्धारण) नियमावली, 1995 (जिसे आगे नियमावली भी कहा गया है) के अनुसार निर्दिष्ट प्राधिकारी (जिन्हें आगे प्राधिकारी भी कहा गया है) के समक्ष चीन जन. गण. (जिसे आगे संबद्ध देश भी कहा गया है) के मूल के अथवा वहां से निर्यातित आफ्लोक्सेसिन (जिसे आगे संबद्ध वस्तु या विचाराधीन उत्पाद भी कहा गया है) के आयातों के संबंध में पाटनरोधी जांच की शुरुआत करने के लिए एक आवेदन प्रस्तुत किया था।

2. यतः प्राधिकारी ने यह पाया कि पाटनरोधी जांच की शुरुआत को न्यायोचित ठहराने के लिए संबद्ध देश के मूल की अथवा वहां से निर्यातित संबद्ध वस्तु के पाटन, घरेलू उद्योग को हुई क्षति तथा कथित पाटन एवं क्षति के बीच कारणात्मक संबंध के पर्याप्त प्रथम दृष्टया साक्ष्य मौजूद हैं और प्राधिकारी ने एतद्वारा पाटनरोधी नियमावली के नियम 5 के अनुसार कथित पाटन और घरेलू उद्योग को हुई परिणामी क्षति की जांच की शुरुआत की ताकि कथित पाटन की मौजूदगी, मात्रा और प्रभाव का निर्धारण किया जा सके और पाटनरोधी शुल्क की उस राशि की सिफारिश की जा सके जिसे यदि लगाया जाए तो वह घरेलू उद्योग को हुई 'क्षति' को समाप्त करने के लिए पर्याप्त होगी।

ख. सामान्य प्रक्रिया

3. इस जांच के संबंध में नीचे वर्णित प्रक्रिया का पालन किया गया है:

- i. प्राधिकारी के संबंधित नियम 5 के उप-नियम (5) के अनुसार जाँच की शुरुआत करने से पहले पाटनरोधी आवेदन की प्राप्ति के बारे में भारत में चीन के दूतावास को सूचित किया।
- ii. और यतः प्राधिकारी ने पाटनरोधी शुल्क संबंधी जाँच की शुरुआत को उचित ठहराने के लिए आवेदक द्वारा प्रस्तुत पर्याप्त साक्ष्य के आधार पर दिनांक 4 अक्टूबर, 2016 की जाँच शुरुआत संबंधी अधिसूचना सं. 14/06/2016-डीजीएडी जारी की।
- iii. प्राधिकारी ने भारत में संबद्ध देश के दूतावास आवेदक द्वारा उपलब्ध कराए गए पतों के अनुसार संबद्ध देश के ज्ञात उत्पादक/निर्यातकों, भारत में ज्ञात आयातकों/प्रयोक्ताओं, अन्य भारतीय उत्पादकों और घरेलू उद्योग को जाँच शुरुआत संबंधी अधिसूचना की प्रतियां भेजीं और उनसे जाँच शुरुआत संबंधी अधिसूचना के 40 दिनों के भीतर लिखित में उनके विचारों से अवगत कराने का अनुरोध किया।
- iv. प्राधिकारी ने पाटनरोधी नियमावली के नियम 6(3) के अनुरूप आवेदन के अगोपनीय अंश की एक-एक प्रति ज्ञात उत्पादकों/निर्यातकों और भारत में चीन के दूतावास को उपलब्ध कराई थी।
- v. चीन के दूतावास से अनुरोध किया गया था कि वे चीनी निर्यातकों/उत्पादकों को निर्धारित समय सीमा के भीतर प्रश्नावली का उत्तर देने की सलाह दें। उत्पादकों/निर्यातकों को भेजे गए पत्र और प्रश्नावली की एक प्रति भी उन्हें चीन के ज्ञात उत्पादकों/निर्यातकों के नाम और पतों के साथ भेजी गई थी।
- vi. प्राधिकारी ने नियमावली के नियम 6 (4) के अनुसार निम्नलिखित ज्ञात उत्पादकों/निर्यातकों को संबंधित जानकारी प्राप्त करने के लिए निर्यातक की प्रश्नावली और बाजार अर्थव्यवस्था प्रश्नावली भेजी :

- क. झेजियांग जिंगसिन फार्मास्युटिकल कं, लिमिटेड
- ख. झेजियांग अपीलोआ कंग्यु फार्मास्युटिकल कं, लिमिटेड
- ग. झेजियांग ईस्ट फार्मास्युटिकल लिमिटेड
- घ. झेजियांग यांगिंग फार्मास्युटिकल कं, लिमिटेड
- ङ. लांगसू गुओताई इंटरनेशनल ग्रुप हुआताइ इम्प एंड एक्प कं, लि.
- च. झेजलांग मेडिसिंस एंड हेल्थ प्राडक्ट्स इंपोर्ट एंड एक्सपोर्ट कं, लि.
- छ. झेजलांग कैमिकल्स इंपोर्ट एंड एक्सपोर्ट कार्पोरेशन
- ज. चाइना सिनोफार्म इंटरनेशनल कार्पोरेशन

vii. उक्त के उत्तर में निम्नलिखित निर्यातकों/उत्पादकों ने उत्तर दिया या प्रश्नावली का उत्तर प्रस्तुत किया है : -

- क. झेजियांग ईस्ट फार्मास्युटिकल लिमिटेड
- ख. झेजलांग मेडिसिंस एंड हेल्थ प्राडक्ट्स इंपोर्ट एंड एक्सपोर्ट कं, लि.
- ग. झेजियांग अपीलो कंग्यु फार्मास्युटिकल कं, लिमिटेड

viii. किसी भी प्रतिवादी निर्यातक ने बाजार अर्थव्यवस्था के व्यवहार का दावा नहीं किया है। दि चाइना चैम्बर ऑफ कॉमर्स और इंपोर्ट एंड एक्सपोर्ट ऑफ मेडीसिन एंड हेल्थ प्रोडक्ट्स एसोसिएशन ने अनुरोध दायर किए हैं। सभी पक्षकारों द्वारा किए गए अनुरोधों/दिए गए उत्तरों पर वर्तमान निर्धारण में विचार किया गया है।

ix. प्राधिकारी ने नियमावली के नियम 6(4) के अनुसार आवश्यक सूचना के मंगाते हुए भारत में संबद्ध वस्तु के निम्नलिखित ज्ञात आयातकों/प्रयोक्ताओं को आयातक प्रश्नावलियां भेजीं :

- क. सिप्ला लिमिटेड
- ख. मैक्लोड फार्मास्युटिकल्स लिमिटेड
- ग. जे.बी. केमिकल्स एंड फार्मास्युटिकल लिमिटेड
- घ. अरिस्टो फार्मास्युटिकल प्राइवेट लिमिटेड
- ङ. सन फार्मास्युटिकल इंडस्ट्रीज लिमिटेड
- च. मेडल फार्मा ड्रग हाउस
- छ. एफडीसी लिमिटेड
- ज. मेडले फैनैसिटिकल लिमिटेड
- झ. मर्क (इंडिया) लिमिटेड
- ञ. कैडिला हेल्थकेयर लिमिटेड
- ट. अल्केम लैबोरेटरीज लिमिटेड

x. किसी भी आयातक ने न ही अनुरोध किया है और न आयातक प्रश्नावली का उत्तर दिया है।

- xi. प्राधिकारी ने विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रस्तुत किए गए साक्ष्यों के अगोपनीय अंशों को हितबद्ध पक्षकारों के निरीक्षण के लिए सार्वजनिक फाईल के रूप में उपलब्ध कराया था।
- xii. प्राधिकारी ने वाणिज्यिक आसूचना एवं सांख्यिकी महानिदेशालय (डीजीसीआई एंड एस) से जाँच अवधि समेत विगत तीन वर्षों के लिए संबद्ध वस्तु के आयातों के सौदा-वार व्योरे की जानकारी देने का अनुरोध किया था। प्राधिकारी ने सौदों की आवश्यक जाँच के बाद आयातों की मात्रा और अपेक्षित विश्लेषण की गणना के लिए डीजीसीआईएंडएस के आंकड़ों पर भरोसा किया है।
- xiii. सामान्यतः स्वीकृत लेखांकन सिद्धांतों (जीएएपी) के आधार पर घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तुत सूचना के आधार पर भारत में संबद्ध वस्तु के उत्पादन की ईष्टतम लागत और उसे बनाने और बेचने की लागत और पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-III के अनुसार क्षति रहित कीमत (एनआईपी) ज्ञात की गई ताकि इस बात का पता लगाया जा सके कि पाटन मार्जिन से कम पाटनरोधी शुल्क घरेलू उद्योग को होने वाली क्षति को दूर करने के लिए पर्याप्त होगा।
- xiv. प्राधिकारी ने 31 जुलाई 2017 को मौखिक सुनवाई आयोजित की थी ताकि हितबद्ध पक्षों को नियम 6 (6) के अनुसार प्रासंगिक सूचना प्रस्तुत करने का अवसर प्रदान किया जा सके, जिसमें घरेलू उद्योग के प्रतिनिधियों और विरोधी हितबद्ध पक्षों ने भाग लिया। घरेलू उद्योग के प्रतिनिधियों और हितबद्ध पक्षों जिन्होंने मौखिक सुनवाई के समय मौखिक रूप से अपने विचार प्रस्तुत किए, उन्हें मौखिक रूप से व्यक्त किए गए विचारों को लिखित में प्रस्तुत करने की सलाह दी गई।
- xv. अंतिम जाँच परिणाम जारी करने की अंतिम तारीख 3 अक्टूबर, 2017 थी, हालांकि नियम 17 (1) (क) के अनुसार केंद्र सरकार द्वारा इसे तीन महीने के लिए 3 जनवरी 2018 तक बढ़ा दिया गया था।
- xvi. एटीएमए मामले में माननीय सर्वोच्च न्यायालय के फैसले के साथ निर्दिष्ट प्राधिकारी के परिवर्तन के कारण और नए निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा दूसरी मौखिक सुनवाई 25 अक्टूबर, 2017 को आयोजित की गई। उन पक्षों, जिन्होंने दूसरी मौखिक सुनवाई में अपने विचार प्रस्तुत किए, से मौखिक रूप से किए गए अनुरोधों को लिखित रूप में और उनके खंडन प्रस्तुत करने के लिए कहा गया।
- xvii. घरेलू उद्योग के आंकड़ों का मौके पर सत्यापन आवश्यक रूप से अपेक्षित सीमा तक किया गया था। इस जांच के प्रयोजन के लिए जहां आवश्यक हो वहां आवश्यक सुधार सहित केवल इस तरह की सत्यापित जानकारी पर भरोसा किया गया है।
- xviii. वर्तमान जांच के उद्देश्य के लिए जांच की अवधि (पीओआई) जुलाई, 2015- जून, 2016 (12 महीने) है। क्षति विश्लेषण के संदर्भ में जाँच में 2013-2014, 2014-2015, 2015-2016, की अवधि और पीओआई शामिल है।
- xix. इस जाँच की प्रक्रिया के दौरान हितबद्ध पक्षों द्वारा किए गए अनुरोधों को जहां वे संगत पाये गये, प्राधिकारी द्वारा विधिवत रूप से स्थान दिया गया है।
- xx. गोपनीय आधार पर हितबद्ध पक्षकारों द्वारा दी गई सूचना की जांच उनके गोपनीयता के दावे के पर्याप्त होने के संबंध में की गई। संतुष्ट होने पर इस प्राधिकारी ने जहां भी आवश्यक हुआ गोपनीयता के दावों को स्वीकार किया है और इस प्रकार की सूचना को गोपनीय माना गया है और उसे अन्य हितबद्ध पक्षकारों को नहीं बताया गया है। जहां भी संभव हुआ गोपनीय आधार पर सूचना देने वाले पक्षकारों को निर्देश दिया गया है कि वे गोपनीय आधार पर दी गई सूचना का पर्याप्त अगोपनीय भाग उपलब्ध करायें।
- xxi. जहां भी किसी हितबद्ध पक्ष ने वर्तमान जाँच की प्रक्रिया के दौरान आवश्यक सूचना जुटाने से मना किया अथवा उसे अन्यथा उपलब्ध नहीं कराया या जांच में अत्यधिक बाधा डाली तो प्राधिकारी ने ऐसे पक्षों को असहयोगी माना है और अपने पास "उपलब्ध तथ्यों" के आधार पर जाँच परिणामों को दर्ज किया है।
- xxii. दिनांक 1.12.2017 को निर्दिष्ट प्राधिकारी के विचाराधीन मामले के अनिवार्य तथ्यों के प्रकटन वाला प्रकटन विवरण जारी किया गया और प्रकटन विवरण के संबंध में टिप्पणियां, यदि कोई हों, प्रस्तुत करने के लिए 08.12.2017 तक का समय दिया गया। प्राधिकारी ने हितबद्ध पक्षों से प्राप्त प्रकटन विवरण के पश्चात की टिप्पणियों पर उचित ध्यान दिया है।
- xxiii. इस अंतिम जाँच परिणाम में *** किसी हितबद्ध पक्षकार द्वारा गोपनीय आधार पर प्रस्तुत सूचना तथा नियमावली के अंतर्गत प्राधिकारी द्वारा इस प्रकार से विचार किये जाने का द्योतक है।
- xxiv. पीओआई के लिए औसत विनियम दर इस प्राधिकारी द्वारा 66.84 रुपये = 1 अमरीकी डॉलर के रूप में लिया गया है।

ग. विचाराधीन उत्पाद और समान वस्तु

घरेलू उद्योग के विचार

4. घरेलू उद्योग के विचार निम्नानुसार हैं :

- i. वर्तमान जाँच में शामिल उत्पाद सभी रूपों में 'ओफ्लोक्सेसिन' है। ओफ्लोक्सेसिन फ्लोरोक्विनोलोन ड्रग श्रेणी का एक सिंथेटिक कीमोथेराप्युटिक एंटीबायोटिक है जिसे दूसरी पीढ़ी का फ्लोरोक्विनोलोन माना जाता है। ओफ्लोक्सिन एक रेसमिक मिश्रण

होता है जिसमें 50 प्रतिशत लिबोफ्लोक्सिन (जैविक सक्रिय संघटक) और 50 प्रतिशत उसका 'मिरर इमेज' या इन्नेसेमर डेक्स्ट्राफ्लोक्सिन होता है।

- ii. ओफ्लोक्सेसिन का प्रयोग ब्रोंसिटिस, निमोनिया सहित त्वचा संक्रमणों और, ब्लेडर, यूरिनरी ट्रेक्ट, प्रजनन अंगों और प्रोस्टेट (एक पुरुष प्रजनन ग्लैंड) के कतिपय संक्रमणों का उपचार करने में किया जाता है। ओफ्लोक्सेसिन, फ्लोरोक्विनोलोन नामक प्रतिजैविक की श्रेणी में आता है। यह संक्रमण फैलाने वाले बैक्टेरिया को मारकर कार्य करता है।
- iii. संबद्ध वस्तु भेषज उत्पाद होने के कारण अधिनियम के अध्याय 30 के उपशीर्ष 30042034 अंतर्गत आती है। तथापि, सीमाशुल्क वर्गीकरण केवल सांकेतिक है और वर्तमान जाँच के दायरे पर किसी भी तरह से बाध्यकारी नहीं है।
- iv. भारतीय उद्योग द्वारा उत्पादित और संबद्ध देश से निर्यातित ओफ्लोक्सेसिन में कोई अंतर नहीं है। भारतीय उद्योग द्वारा उत्पादित ओफ्लोक्सेसिन और संबद्ध देश से आयातित ओफ्लोक्सेसिन भौतिक और रासायनिक विशेषताओं, विनिर्माण प्रक्रिया और प्रौद्योगिकी, कार्य और प्रयोग, उत्पाद विनिर्देशन, कीमत निर्धारण, वितरण और विपणन तथा वस्तुओं के टैरिफ वर्गीकरण जैसी अनिवार्य उत्पाद विशेषताओं की दृष्टि से तुलनीय हैं। उपभोक्ता इन दोनों का एक दूसरे के स्थान पर प्रयोग कर सकते हैं और कर रहे हैं। ये दोनों तकनीकी और वाणिज्यिक रूप से प्रतिस्थापनीय हैं। घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित ओफ्लोक्सेसिन को पाटनरोधी नियमावली के अनुसार संबद्ध देश से आयातित ओफ्लोक्सेसिन के समान वस्तु माना जाना चाहिए।

प्रतिवादी हितबद्ध पक्षों के विचार

5. किसी भी आयातक, उपभोक्ता, निर्यातक और किसी अन्य हितबद्ध पक्ष ने विचाराधीन उत्पाद और समान वस्तु के संबंध में कोई टिप्पणी या अनुरोध नहीं किया है।

प्राधिकारी द्वारा जाँच

6. विचाराधीन उत्पाद "ऑफ्लॉक्ससिन" है, जो रासायनिक फार्मूला $C_{18}H_{20}FN_3O_4$ के साथ सिंथेटिक केमोथेराप्यूटिक एंटीबायोटिक है। ऑफ्लॉक्ससिन एक सफेद पीला क्रिस्टलीय पाउडर है। विचाराधीन उत्पाद के लिए माप की सामान्य वाणिज्यिक इकाई किलोग्राम है यह भार के आधार पर उद्धृत किया गया है, और किलोग्राम या एमटी में सार्वभौमिक रूप से बेचा जाता है।

7. संबद्ध वस्तु को सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 के अध्याय 30 के अंतर्गत उपशीर्ष 30042034 के अधीन वर्गीकृत किया जाता है। सीमाशुल्क वर्गीकरण केवल सांकेतिक है और जाँच के दायरे पर किसी भी तरह से बाध्यकारी नहीं है।

8. रिकॉर्ड में उपलब्ध सूचना पर विचार करने के बाद, प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित और संबद्ध देश से आयातित संबद्ध वस्तु के बीच कोई ज्ञात अंतर नहीं है। घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित संबद्ध वस्तु और संबद्ध देश से आयातित संबद्ध वस्तु भौतिक और रासायनिक विशेषताओं, विनिर्माण प्रक्रिया और प्रौद्योगिकी, कार्य और प्रयोग, उत्पाद विनिर्देशन, कीमत निर्धारण, वितरण और विपणन तथा वस्तुओं के टैरिफ वर्गीकरण जैसी अनिवार्य उत्पाद विशेषताओं की दृष्टि से तुलनीय हैं और समान वस्तु हैं। उपभोक्ता इन दोनों का एक दूसरे के स्थान पर प्रयोग कर रहे हैं। अतः वर्तमान जाँच के प्रयोजनार्थ भारत में आवेदक द्वारा उत्पादित संबद्ध वस्तु को संबद्ध देश से आयातित की जा रही संबद्ध वस्तु के समान वस्तु माना जा रहा है।

घ. घरेलू उद्योग का दायरा और उसकी स्थिति

घरेलू उद्योग के विचार

9. घरेलू उद्योग के दायरे और स्थिति के संबंध में घरेलू उद्योग द्वारा निम्नलिखित अनुरोध किए गए हैं :

- i. यह याचिका मै. आरती ड्रग्स लि. द्वारा दायर किया गया है। आवेदक संबद्ध वस्तु के कुछ अन्य उत्पादक अर्थात् अनुजा हेल्थकेयर लि., इनफिनिटी लेबोरेट्रीज लि., डेनोफार्म कैमिकल्स लि., सन फार्मास्युटिकल इंड लि., अल्केम लेबोरेट्रीज लि. और गोदावरी ड्रग्स लि. हैं।
- ii. याचिकाकर्ता का उत्पादन भारतीय उत्पादन में एक बड़ा हिस्सा बनता है और इसलिए, याचिकाकर्ता को नियमों के अर्थ के भीतर "घरेलू उद्योग" माना जाना चाहिए।
- iii. याचिकाकर्ता ने जांच की अवधि के दौरान संबद्ध वस्तु का आयात नहीं किया है, और इसके अलावा, नियम 2 (ख) के अर्थ के भीतर वह चीन में संबद्ध वस्तु के किसी भी निर्यातक या निर्माता या भारत में विचाराधीन उत्पाद के किसी भी आयातक या प्रयोक्ता से संबंधित नहीं है।

प्रतिवादी हितबद्ध पक्षों के विचार

10. प्रतिवादी हितबद्ध पक्षों ने कहा है कि घरेलू उद्योग द्वारा दावा किए गए उत्पादन के आंकड़ों की पुष्टि करने के लिए कोई दस्तावेजी प्रमाण नहीं है। जब तक संबद्ध वस्तु के कुल उत्पादन आंकड़े निर्णायक रूप से निर्धारित नहीं होते हैं, घरेलू उत्पादक (कों) में से कोई भी घरेलू उद्योग के रूप में योग्य नहीं होगा।

प्राधिकारी द्वारा जाँच

11. आवेदन मेसर्स आरती ड्रस लिमिटेड द्वारा दायर किया गया था उनका दावा है कि भारतीय उत्पादन में उनका एक बड़ा हिस्सा है। याचिकाकर्ता ने संबद्ध वस्तु का आयात नहीं किया है और न ही संबद्ध वस्तु के आयातक या निर्यातकों से संबंधित है। याचिकाकर्ता वर्तमान प्रयोजनों के लिए पात्र घरेलू उद्योग है हितबद्ध पक्षों ने तर्क दिया है कि यह सिद्ध करने के लिए कोई आधार या सबूत उपलब्ध नहीं है कि याचिकाकर्ता के पास वर्तमान याचिका दायर करने की योग्यता है।

12. प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तुत की गई जानकारी को सत्यापित की है। याचिकाकर्ता से संबंधित उत्पादन के आंकड़ों का दावा याचिकाकर्ता द्वारा प्रदान किए गए "सकारात्मक साक्ष्य" पर आधारित है और प्राधिकारी द्वारा इसका सत्यापन भी किया गया है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि पीयूसी के उत्पादन में ओ-एसिड की प्रमुख कच्ची सामग्री के रूप में आवश्यक है। प्राधिकारी ओ-एसिड के पाटन की समानांतर जांच कर रहे हैं जिसमें याचिकाकर्ता ने दावा किया था कि याचिकाकर्ता ओ-एसिड का एकमात्र (नया) उत्पादक है। भारत में ओ-एसिड के कोई भी उत्पादक नहीं थे/हैं। ओ-एसिड के उत्पादन के संबंध में याचिकाकर्ता का दावा निर्विरोध रहा है। इस प्रकार, ऑफलॉक्सासिन का उत्पादन या तो आयातित ओ-एसिड या ऐसे ओएसिड से होता है जो याचिकाकर्ता द्वारा उत्पादित है। ओ-एसिड के संबंध में उत्पादन के आंकड़ों और भारत में ओ-एसिड के आयात के आंकड़ों को प्राधिकारी द्वारा भी सत्यापित किया गया है। प्राधिकारी ने माना है कि 1 एमटी ऑफलॉक्सासिन के उत्पादन में *** एमटी ओ-एसिड की खपत की आवश्यकता है। इस उपभोग के आंकड़े को प्राधिकारी द्वारा भी सत्यापित किया गया है। इस प्रकार, भारत में ओ-एसिड के आयात से यथा निर्धारित ओ-एसिड से संबंधित उपभोग के आंकड़ों के आधार पर, प्राधिकारी ने भारत में ऑफलॉक्सासिन के उत्पादन की मात्रा निर्धारित की है। यह पाया जाता है कि पीओआई के दौरान भारत में ऑफलॉक्सासिन का उत्पादन *** मीट्रिक टन था, जिसमें पीओआई के दौरान अकेले याचिकाकर्ता का उत्पादन *** एमटी था। इस प्रकार, याचिकाकर्ता का उत्पादन भारतीय उत्पादन का 58% बनता है।

13. अन्य ज्ञात उत्पादकों ने वर्तमान जांच में भाग नहीं लिया है। विशेष रूप से ज्ञात भारतीय उत्पादकों को जानकारी मांगने के लिए एक पत्र भेजा गया था, हालांकि केवल डेनॉफॉर्म केमिकल्स प्राइवेट लिमिटेड ने उनके उत्पादन के बारे में जानकारी देने और याचिका का समर्थन करने संबंधी प्रतिक्रिया दी थी। याचिकाकर्ता के दावे पर विवाद करने के लिए किसी अन्य हितबद्ध पक्ष ने कोई दस्तावेजी साक्ष्य प्रदान नहीं किया है। आवेदन का कोई विरोध नहीं हुआ है इसलिए प्राधिकारी का निष्कर्ष है कि याचिकाकर्ता के उत्पादन का भारतीय उत्पादन में एक बड़ा हिस्सा बनता है। इसलिए याचिकाकर्ता विधि के अनुसार योग्यता संबंधी अपेक्षा को पूरा करते हैं।

ड. हितबद्ध पक्षों द्वारा उठाए गए विविध मुद्देघरेलू उद्योग के विचार

14. घरेलू उद्योग ने अपने अनुरोधों में हितबद्ध पक्षों के तर्कों का खंडन किया है और अनुरोध संक्षेप में निम्नानुसार हैं:

- i. याचिकाकर्ता द्वारा कुछ भी अत्यधिक गोपनीय होने का दावा नहीं किया गया है। याचिकाकर्ता ने लागत संबंधी जानकारी को गोपनीय के रूप में दावा करने के लिए पर्याप्त तर्क प्रस्तुत किए हैं। इसके अलावा, सार्वजनिक रूप से उपलब्ध जानकारी के संबंध में गोपनीयता का दावा किया गया है।
- ii. निर्यातकों ने अधिकतर सूचनाओं को गोपनीय माना है और उनके द्वारा कोई उचित सारांश प्रस्तुत नहीं किया गया है। हितबद्ध पक्षों ने ऐसी सभी सूचनाओं का खुलासा नहीं किया है, जिन्हें वे नियमों और इस संबंध में निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा अनुसरण की गई परिपाटी के तहत खुलासा करने के लिए बाध्य हैं;
- iii. याचिकाकर्ता ने देश के सांविधिक विनियमों के अनुसार आबद्ध रूप से उत्पादित कच्चे माल को स्थानांतरित किया है।
- iv. याचिकाकर्ता ने पहले से ही ऑलॉक्सासिन और ओ एसिड दोनों के लिए संयुक्त याचिका दायर की थी। हालांकि, प्राधिकारी ने इन पर दो अलग-अलग उत्पादों के रूप में विचार करने और अलग-अलग आवेदन पत्र दाखिल करने का निर्देश दिया। किसी भी मामले में, मध्यवर्ती उत्पाद और अंतिम उत्पाद पर पाटनरोधी शुल्क लागू करने में कोई प्रतिबंध नहीं है क्योंकि क्षति दोनों के लिए अलग-अलग सिद्ध होती है।
- ii. आयात बाजार में क्षमताओं और मांग की सीमा तक देश में घरेलू उद्योग की विचाराधीन उत्पाद का उत्पादन और बेचने संबंधी वृद्धि नहीं होने दे रहे हैं। उत्पादन में विसंगति भारी मात्रा में पाटित वस्तुओं की मौजूदगी के कारण हुई है।

प्रतिवादी हितबद्ध पक्षों के अनुरोध

15. हितबद्ध पक्षों ने मौजूदा जांच के संबंध में कई मुद्दे उठाए हैं, जिनमें घरेलू उद्योग द्वारा उसकी याचिका और उनके क्षति संबंधी दावों में अपनाई गई पाटन निर्धारण की पद्धति शामिल हैं, जो निम्नानुसार हैं:

- i. घरेलू उद्योग द्वारा अत्यधिक गोपनीयता का दावा किया गया है और पाटन और क्षति के दावों से संबंधित अधिकांश महत्वपूर्ण आंकड़ों को गोपनीय रखा गया है जिससे हितबद्ध पक्ष उन्हें सार्थक ढंग से समझने और उन पर टिप्पणी करने में असमर्थ हो गए हैं।
- ii. आवेदक ने आबद्ध रूप से उत्पादित कच्चे माल अर्थात् ओ-एसिड का इस्तेमाल किया है और इसे वास्तविक लागत से अधिक लागत पर स्थानांतरित किया है, जिसके परिणामस्वरूप संबद्ध वस्तु की कुल लागत में वृद्धि हुई है। इसे लागत जमा 10% पर स्थानांतरित किया गया था।
- iii. ऑफ़लॉक्सासिन की कुल लागत का लगभग 85 प्रतिशत हिस्सा ओ-एसिड की लागत का होता है। ऑफ़लॉक्सासिन के उत्पादन के लिए न्यूनतम मूल्यवर्धन की आवश्यकता होती है प्राधिकारी को मध्यवर्ती उत्पाद ओ-एसिड और अंतिम उत्पाद- ऑफ़लॉक्सासिन पर पाटनरोधी शुल्क लगाने की अनुमति नहीं देनी चाहिए।
- iv. निर्यातक मै. जेझियांग ईस्ट एशिया फार्मास्युटीकल कं. लि. ने यह उल्लेख करते हुए नियमावली, 1995 के नियम 15 के संबंध में कीमत की वचनबद्धता प्रस्तुत की है कि वे भारत में अम.डॉ./प्रति किग्रा. से कम सीआईएफ कीमत पर संबद्ध वस्तुओं की बिक्री नहीं करने के लिए सहमत हैं।

प्राधिकारी द्वारा जाँच

16. हितबद्ध पक्षों द्वारा उठाए गए विभिन्न विविध मुद्दों की जांच की गई है। जहां तक हितबद्ध पक्षों और घरेलू उद्योग द्वारा गोपनीयता के दावों के संबंध में उठाए गए मुद्दों का संबंध है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि सूचना प्रस्तुत करने वाले विभिन्न पक्षों के गोपनीयता संबंधी दावों की संभव और व्यावहारिक सीमा तक जांच की गई है और पक्षों द्वारा प्रदान की गई जानकारी की प्रकृति के आधार पर गोपनीयता के दावों को स्वीकार किया गया है।

- i. घरेलू उद्योग द्वारा अपनाये गए स्थानांतरण कीमत निर्धारण को प्राधिकारी द्वारा सत्यापित किया गया था। हालांकि, प्राधिकारी ने ओ एसिड (बिना किसी लाभ मार्जिन) के उत्पादन के सामान्य मूल्य के आधार पर ओ एसिड की स्थानांतरण कीमत को अपनाया है।
- ii. ओ-एसिड और ऑफ़लॉक्सासिन संबंधी क्षति की अलग-अलग जांच की गई है, क्योंकि प्राधिकारी ने इन दोनों उत्पादों को अलग-अलग वस्तु के रूप में माना है।
- iii. मध्यवर्ती और अंतिम उत्पाद पर पाटनरोधी शुल्क लगाने के संबंध में, प्राधिकारी नोट करते हैं कि पाटनरोधी नियमों के तहत ऐसा कोई प्रतिबंध नहीं है, जो एक साथ जांच और मध्यवर्ती और अंतिम उत्पादों पर शुल्क लगाने पर रोक लगाता हो।
- iv. कीमत की वचनबद्धता : मूल्य निधि पर निलंबन या जांच की समाप्ति से संबंधित नियम 15 प्रदान करता है

(1) निर्दिष्ट प्राधिकरण जांच में निलंबित या समाप्त कर सकता है यदि प्रश्न के आलेख के निर्यातक:

(i) कीमतों को संशोधित करने के लिए नामित प्राधिकरण को लिखित रूप में एक उपक्रम प्रस्तुत करता है जिससे कि उक्त लेख का कोई निर्यात भारत में पड़ी हुई कीमतों पर न हो, या

(ii) विशिष्ट देशों से आयात के मामले में कीमतों को संशोधित करने के लिए कार्य करता है ताकि डंपिंग का हानिकारक प्रभाव समाप्त हो जाए और डिज़ाइन किया गया प्राधिकरण संतुष्ट हो जाए कि डंपिंग का हानिकारक प्रभाव समाप्त हो गया है।

बशर्ते कि निर्दिष्ट प्राधिकारी जांच को पूरा करेगा और अपनी खोज को रिकॉर्ड करेगा, अगर निर्यातक ऐसा चाहता है, या यह तय करता है।

(2) उप-नियम (1) के खंड (ii) के तहत मूल्य वृद्धि के संबंध में कोई उपक्रम किसी भी निर्यातक से स्वीकार नहीं किया जाएगा, जब तक कि निर्दिष्ट प्राधिकरण ने डंपिंग और चोट के प्रारंभिक निर्धारण नहीं किया।

(3) निर्दिष्ट प्राधिकरण, किसी भी निर्यातक द्वारा दिए गए उपक्रमों को भी स्वीकार नहीं कर सकता है, यदि यह मानता है कि ऐसे उपक्रम की स्वीकृति अव्यावहारिक है या किसी अन्य कारण के लिए अस्वीकार्य है।

(4) निर्दिष्ट प्राधिकरण केंद्र सरकार को एक उपक्रम और निलंबन या जांच की समाप्ति की स्वीकृति को सूचित करेगा और इस संबंध में एक सार्वजनिक नोटिस भी जारी करेगा। सार्वजनिक नोटिस, अन्य बातों के साथ, उपक्रम का गैर-गोपनीय हिस्सा होगा।

(5) ऐसे मामलों में जहां एक प्राधिकृत प्राधिकारी द्वारा स्वीकार किया गया है, केन्द्र सरकार, उस अवधि के लिए अधिनियम की धारा 9 ए की उपधारा (2) के तहत निर्दिष्ट शुल्क के तहत शुल्क नहीं लगा सकती है, जो निर्दिष्ट प्राधिकरण को स्वीकार्य उपबंध वैध ठहरता है।

(6) जहां निर्दिष्ट प्राधिकरण उप-नियम (1) के तहत कोई उपक्रम स्वीकार कर लेता है, उसमें उस निर्यातक की आवश्यकता हो सकती है, जिनके से उपक्रम पूरा करने के लिए समय-समय पर जानकारी प्रदान करने और सत्यापन के लिए अनुमति देने के लिए इस तरह के उपक्रम को स्वीकार किया गया है। सम्बंधित जानकारी :

बशर्ते कि उपक्रम के किसी भी उल्लंघन के मामले में, नामित प्राधिकारी जितनी जल्दी हो सके, केन्द्र सरकार को उपक्रम के उल्लंघन के बारे में सूचित करें और प्रावधानों के अनुसार इस तरह के उल्लंघन की तिथि से अंतिम शुल्क लगाने की सिफारिश करें। इन नियमों का (7) नामित प्राधिकारी, स्वो म्यू या किसी भी अनुरोध के आधार पर या किसी अन्य इच्छुक पार्टी के निर्यातकों या आयातकों से प्राप्त अनुरोधों के आधार पर, समय-समय पर किसी भी उपक्रम जारी रखने की आवश्यकता की समीक्षा करें।

v. मेसर्स झेजियांग ईस्ट एशिया फार्मास्युटिकल कंपनी लिमिटेड, विषय देश के विषय वस्तु के उत्पादक और निर्यातक ने मूल्य उपक्रम देने की इच्छा व्यक्त की थी। निर्यातक द्वारा दिया जाने वाला मूल्य उपक्रम प्राधिकरण प्राधिकरण द्वारा विचार किया गया था। घरेलू उद्योग ने निर्यातक के मूल्य उपक्रम की स्वीकृति का जोरदार विरोध किया है। प्राधिकरण ने कहा कि मूल्य वर्धन की प्रभावी निगरानी के लिए आवश्यक सामान्य मूल्य और लागत से संबंधित सूचनाएं उपलब्ध नहीं हैं क्योंकि प्रमुख कच्चा माल की कोई प्रकाशित कीमत नहीं है। इसके अलावा, निर्यातक ने प्रमुख कच्ची सामग्रियों में कीमतों में बदलाव के लिए लिंक करने की पेशकश नहीं की है। इसलिए कच्चे माल और संबंधित निर्यात मूल्यों में कीमत भिन्नता पर नजर रखना संभव नहीं है। मूल्य उपक्रम की निगरानी में प्रशासनिक कठिनाई को ध्यान में रखते हुए, प्राधिकरण निर्यातक के अनुरोध को स्वीकार करने के इच्छुक नहीं है। किसी भी मामले में, मेसर्स झेजियांग ईस्ट एशिया फार्मास्युटिकल कंपनी लिमिटेड के खिलाफ एंटी डंपिंग शुल्क कम निधि के नियमों के मुताबिक चोटों के घाटे पर है, निदेशालय द्वारा पीछा किए गए और एनआईपी की तुलना में कम कीमत का उनका उपक्रम कम है। घरेलू उद्योग की वजह से चोट इसलिए, प्राधिकरण निर्यातक द्वारा प्रदत्त मूल्य उपक्रम को खारिज कर देता है।

च. सामान्य मूल्य, निर्यात कीमत और पाटन मार्जिन का निर्धारण

17. पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध 1 के सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम 1975 की धारा 9क (1) (ग) में प्रासंगिक प्रावधान दिए गए हैं।

घरेलू उद्योग के विचार

18. घरेलू उद्योग ने अन्य बातों के साथ-साथ निम्नानुसार अनुरोध किए हैं :-

- i. याचिकाकर्ता ने सर्वोत्तम उपलब्ध जानकारी के आधार पर सामान्य मूल्य का परिकलन किया है। सार्वजनिक सूचनाओं की उपलब्धता दिखाने के लिए हितबद्ध पक्षों ने कोई साक्ष्य नहीं दिया है। यह इंगित करना भी प्रासंगिक है कि यदि ऐसी कोई भी जानकारी सार्वजनिक रूप से उपलब्ध है, तो हितबद्ध पक्ष यह सिद्ध करने के लिए स्वतंत्र है कि आयात कीमत पाटित कीमत नहीं है।
- ii. चूंकि जांच की अवधि के आधार पर घरेलू उद्योग को पाटन के कारण क्षति होना सिद्ध हुआ है, इसलिए केवल जांच अवधि के दौरान प्रचलित दशाओं को इस उद्देश्य के लिए प्रासंगिक, उचित और आवश्यक माना जाना चाहिए।
- iii. चीन के उत्पादकों को गैर बाजार अर्थव्यवस्था कंपनियों के रूप में माना जाना चाहिए क्योंकि चीन में लागत और कीमतों में बाजार शक्तियां उचित रूप से प्रतिबिंबित नहीं होती हैं। अनुबंध-1 के पैरा 8 में वह मापदंड निर्दिष्ट हैं, जिन पर बाजार अर्थव्यवस्था का दर्जा देने के लिए विचार किया जाना चाहिए। इसका यह भी अर्थ है कि जब तक इन शर्तों को पूरा/पालन नहीं किया जाता है, तब तक चीन में लागत और कीमतों को अपनाया नहीं जा सकता है।
- iv. बाजार अर्थव्यवस्था के दर्जे पर का विचार जांच अवधि के दौरान प्रचलित मापदंडों पर आधारित है। चूंकि चीन में लागत और कीमतों की अस्वीकृति का कारण अनुबंध-1 के पैरा 8 में सूचीबद्ध कारकों के कारण चीन में लागत और कीमतों में विकृति का होना है, चीन के उत्पादकों को बाजार अर्थव्यवस्था कंपनियों के रूप में माने जाने के लिए जांच अवधि प्रासंगिक है।
- v. चूंकि चीन की कंपनियों को दिसंबर, 2016 तक अनुबंध-1 के पैरा 8 में वर्णित कारणों के लिए बाजार की अर्थव्यवस्था का दर्जा नहीं दिया गया है, इसलिए चीनी उत्पादकों को तब तक गैर-बाजार अर्थव्यवस्था कंपनियों के रूप में माना जाना चाहिए, जब तक कि जांच अवधि में एक्सेसन संधि प्रोटोकॉल में निर्दिष्ट अवधि शामिल रहती है।
- vi. नियम 2 (ख) के संदर्भ में, यह सुस्थापित कानूनी स्थिति है कि घरेलू उत्पादक या निर्यातक या आयातक के साथ उसके संबंध की जांच, जांच अवधि के संदर्भ में की जाती है। यदि योग्यता संबंधी प्रयोजनों के लिए केवल पीओआई प्रासंगिक है, सामान्य मूल्य के निर्धारण के लिए भी केवल पीओआई प्रासंगिक होनी चाहिए।

- vii. चीन के उत्पादकों को गैर-बाजार अर्थव्यवस्था के वातावरण के तहत संचालित कंपनियां माना जाना चाहिए और प्राधिकारी अनुबंध-1 के पैरा 7 के आधार पर सामान्य मूल्य निर्धारित करने की कार्रवाई करनी चाहिए।
- viii. सामान्य मूल्य इस कारण से बाजार अर्थव्यवस्था वाले तीसरे देश में परिकलित कीमत या मूल्य के आधार पर निर्धारित नहीं किया जा सकता है कि संगत जानकारी सार्वजनिक रूप से उपलब्ध नहीं है। याचिकाकर्ता ने दावा किया है कि भारत में विधिवत रूप से समायोजित उत्पादन लागत के आधार पर सामान्य मूल्य निर्धारित किया जाए।
- ix. चीन से पाटन मार्जिन न केवल अधिक है, बल्कि काफी अधिक है, इस प्रकार भारत में विचाराधीन उत्पाद के भारी पाटन की मौजूदगी सिद्ध होती है। वर्तमान क्षति की पूरी अवधि के दौरान चीन की आयात मात्रा काफी अधिक रही है।

प्रतिवादी हितबद्धपक्षों के विचार

19. सामान्य मूल्य के संबंध में आयातकों, उपभोक्ताओं, निर्यातकों और अन्य हितबद्ध पक्षों ने के निम्नलिखित अनुरोध प्रस्तुत किए हैं :-

i. सीएनवी कानून के अनुरूप नहीं है क्योंकि -

- क. आवेदक ने भारत में समान उत्पाद के लिए वास्तव में भुगतान की गई या देय कीमत के आधार पर सामान्य मूल्य का परिकलन किया है, जो उचित नहीं है।
- ख. आवेदक के कच्चे माल का आयातक होने के कारण, प्राधिकारी को आयातित ओ-एसिड की लागत के आधार पर सामान्य मूल्य का आकलन करना चाहिए और आवेदक द्वारा उत्पादित ओ-एसिड की मानक लागत के आधार पर नहीं।

च.3 प्राधिकारी द्वारा जाँच

20. प्राधिकारी ने चीन जन. गण. के निर्यातकों को निर्यातक प्रश्नावली और बाजार अर्थव्यवस्था व्यवहार (एमईटी) संबंधी प्रश्नावली की प्रतियां भेजीं। तथापि, किसी उत्पादक/निर्यातक ने एमईटी का दावा नहीं किया है। उपरोक्त के मद्देनजर, प्राधिकारी चीन जन. गण. के मामले में सामान्य मूल्य निर्धारण के लिए नियमावली के अनुबंध 1 के पैरा-7 के अनुसार आगे प्रक्रिया करना उचित समझते हैं।

21. जहां तक प्रतिवादी हितबद्ध पक्षों के इस दावे का संबंध है कि चीन में सामान्य मूल्य भारत को बाजार की अर्थव्यवस्था तीसरे देश से समान वस्तु की आयात कीमत पर विचार करके निर्धारित किया जा सकता है, यह नोट किया जाता है कि इस संबंध में किसी भी पक्ष द्वारा कोई सूचना नहीं दी गई है। इसलिए, प्राधिकारी ने नियमों के अनुसार कार्रवाई की है।

22. उपरोक्त के मद्देनजर, प्राधिकारी ने वर्तमान जांच के प्रयोजनार्थ अनुबंध - 1 के पैरा 7 को ध्यान में रखते हुए सामान्य मूल्य परिकलित किया गया है। भारत में चीन से आयातित संबद्ध वस्तु के लिए सामान्य मूल्य का परिकलन घरेलू उद्योग द्वारा प्रदत्त सूचना के अनुसार प्रमुख कच्ची सामग्री की ईष्टतम खपत, परिवर्तन लागत, व्याज एसजीए व्यय आदि को उत्पादन लागत पर तर्कसंगतलाभ के साथ-साथ घरेलू उद्योग के लिए अनुमत स्तरों पर विचार करते हुए परिकलित किया गया है। कच्ची सामग्री की लागत के लिए पंधुच मूल्य को एफओबी कीमत ज्ञात करने के लिए सीमाशुल्क, उपकर, पंधुच प्रभार, समुद्री भाड़ा और समुद्री बीमा के लिए विधिवत रूप से समायोजित करने के पश्चात चीन से आयातित ओ-एसिड के आधार पर लिया गया है और उसके बाद कच्ची सामग्री की इस एफओबी कीमत को सीएनवी ज्ञात करने के लिए इस्तेमाल किया गया है।

चीन में सभी निर्यातकों के लिए निर्यात कीमत

23. संबद्ध देश के निम्नलिखित उत्पादकों/निर्यातकों ने निर्यातक प्रश्नावली का उत्तर दायर किया है और निर्यात कीमत का विवरण देकर जानकारी प्रदान की है:

- i. झेजियांग ईस्ट फार्मास्युटिकल लिमिटेड
- ii. झेजियांग अपीलो कंग्यू फार्मास्युटिकल कं, लिमिटेड
- iii. झेजियांग मेडिसिंस एंड हेल्थ प्राडक्ट्स इंपोर्ट एंड एक्सपोर्ट कं. लि.

24. उत्तरों की उचित रूप से जांच और संभव सीमा तक सत्यापन किया गया है ताकि पाटन मार्जिन निर्धारित किया जा सके।

25. मैसर्स झेजियांग ईस्ट-एशिया फार्मास्युटिकल कंपनी लिमिटेड और झेजियांग अपीलो कंग्यू फार्मास्युटिकल कंपनी लिमिटेड द्वारा दायर किए गए उत्तरों से प्राधिकारी ने नोट किया है कि वे संबद्ध वस्तु के उत्पादक और निर्यातक हैं। पीओआई के दौरान, झेजियांग ईस्ट-एशिया और झेजियांग अपीलो कंग्यू ने सीधे संबद्ध वस्तुओं का निर्यात किया है। अंतर्देशीय भाड़ा, समुद्री भाड़ा, हैंडलिंग और सीमाशुल्क, बीमा, ऋण लागत और बैंक प्रभार के लिए समायोजन का उत्पादकों और निर्यातकों द्वारा दावा किया गया है और प्राधिकारी द्वारा उनकी अनुमति दी गई है। तदनुसार, निर्यात कीमत कारखाना-द्वार स्तर पर निर्धारित की गई है जिसे नीचे पाटन मार्जिन तालिका में दर्शाया

गया है।

26. झेजियांग मेडिसिंस एंड हेल्थ प्राडक्ट्स इंपोर्ट एंड एक्सपोर्ट कं. लि. ने निर्यातक प्रश्नावली का उत्तर प्रस्तुत किया है। जाँच करने पर यह पाया गया कि वे संबद्ध वस्तु के केवल निर्यातक हैं, न कि उत्पादक। वे भारत और साथ ही अन्य देशों में निर्यात कर रहे हैं। परिशिष्ट 2 के विवरण के अनुसार उन्होंने भारत में पाँच खेपों का निर्यात किया है। उन्हें चीन में असंबद्ध उत्पादकों से खरीदा गया और फिर भारत को निर्यात किया गया। झेजियांग ईस्ट-एशिया फार्मास्युटिकल कं. लिमिटेड नामक केवल एक उत्पादक ने उत्तर दिया है, तथापि, अन्य उत्पादकों ने उत्तर नहीं दिया है। उक्त निर्यात के लिए उत्पादकों के उत्तर के अभाव के मद्देनजर प्राधिकारी ने मैसर्स झेजियांग मेडिसिंस एंड हेल्थ प्राडक्ट्स इंपोर्ट एंड एक्सपोर्ट कंपनी लिमिटेड के लिए अलग पाटन मार्जिन पर विचार नहीं करने का निर्णय लिया है।

पाटन मार्जिन

27. उक्त सामान्य मूल्य और निर्यात कीमत पर विचार करने पर, संबद्ध देश से संबद्ध वस्तु के सभी निर्यातकों के लिए पाटन मार्जिन निम्नानुसार निर्धारित किया गया है :

पाटन मार्जिन तालिका

क्र. सं.	उत्पादक/निर्यातक	सीएनवी अम.डा./किग्रा	एनईपी अम.डा./किग्रा	पाटन मार्जिन		
				अम.डा./किग्रा	(%)	रेंज
1.	झेजियांग ईस्ट-एशिया फार्मास्युटिकल कं. लिमिटेड	***	***	***	***	20-30
2.	झेजियांग अपीलो कंग्यू फार्मास्युटिकल कंपनी लिमिटेड	***	***	***	***	1-10
3.	कोई अन्य	***	***	***	***	25-35

छ. क्षति और कारणात्मक संबंध

28. प्राधिकारी नोट करते हैं कि पाटनरोधी शुल्क लगाने के लिए आवेदन मैसर्स आरती ड्रग्स लिमिटेड द्वारा दायर किया गया है। नियमावली के नियम 2 (ख) के अनुसार याचिकाकर्ता को इस जांच के प्रयोजन के लिए घरेलू उद्योग माना गया है। इसलिए, इस निर्धारण के प्रयोजनार्थ, नियम 2 (ख) में यथा परिभाषित घरेलू उद्योग का गठन करने वाले याचिकाकर्ता की लागत और क्षति संबंधी जानकारी की जांच की गई है।

घरेलू उद्योग के विचार

29. घरेलू उद्योग ने क्षति और कारणात्मक संबंध के बारे में निम्नानुसार अनुरोध किए हैं:

- क्षति अवधि के दौरान आयात समग्र रूप से और कुल आयात, उत्पादन और खपत के संबंध में काफी अधिक रहे हैं। संबद्ध देश से पाटित आयातों ने हाल की अवधि में भारी मात्रा में भारतीय पत्तनों में प्रवेश किया है।
- आयात में गिरावट देश में ओ-एसिड के उत्पादन की वजह से हुई है, जिसके चलते विचाराधीन उत्पाद का घरेलू उत्पादन अधिक हो गया, वास्तव में आयात की मात्रा काफी कम होती, लेकिन देश में क्षमता निर्माण के साथ भारतीय बाजार को गंवाने की संभावना को देखते हुए देश में ओ-एसिड और ऑफलाक्सासिन की पाटन के लिए निर्यातकों ने घरेलू उद्योग को नुकसान पहुंचाने और भारतीय बाजार में हिस्सेदारी बनाए रखने के लिए परस्पर प्रतिस्पर्धा करने हेतु भारतीय बाजार में कीमत युद्ध का सहारा लेकर आक्रामक रुख अपनाया, जैसा कि कीमतों में तेजी से गिरावट से स्पष्ट है।
- याचिकाकर्ता द्वारा ओ एसिड के उत्पादन के शुरू होने के साथ ही जांच अवधि में ऑफलाक्सेसिन की आयात कीमतों में भारी गिरावट आई है, इस प्रकार घरेलू उद्योग को पर्याप्त आबद्ध क्षमताएं होने के बावजूद ओ एसिड का आयात करने और इसे अन्य इकाई को काफी अलाभकारी कीमतों पर अंतरित करने के लिए बाध्य किया गया।
- 2013-14, 2014-15 में कीमत कम कटौती सकारात्मक थी और 2015-16 और पीओआई में नकारात्मक थी। पीओआई में नकारात्मक कीमत कटौती का कारण यह है कि याचिकाकर्ता के पास चीन के उत्पादकों द्वारा प्रस्तावित कीमत पर प्रतिक्रिया देने के अलावा कोई विकल्प नहीं था और इसलिए याचिकाकर्ता की कीमतों में चीन के उत्पादकों द्वारा प्रतिस्पर्धा में आयात की जाने वाली कीमतों को दर्शाया गया है, उस महीने वास्तविक पहुंच कीमत पहले बुक किए गए आर्डर दर्शाती है।
- इस अवधि के दौरान भारी कीमत मंदी है। पाटित आयातों की वजह से कीमतों में गिरावट के कारण घरेलू उद्योग के कार्यनिष्पादन पर काफी क्षतिकारी प्रतिकूल कीमत प्रभाव पड़ा है, जिससे पाटन और घरेलू उद्योग को हुई परिणामी क्षति पर रोक लगाने के लिए पाटनरोधी शुल्क लगाकर तत्काल कार्रवाई की आवश्यकता है।

- vi. क्षति अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के क्षमता उपयोग में कमी आई है। पाटित आयातों की उपस्थिति घरेलू उद्योग को पूरी तरह से अपनी क्षमता का उपयोग करने और देश में भारी मांग और क्षमता के बावजूद इसके उत्पादन और बिक्री को अधिकतम करने नहीं दे रही है।
- vii. याचिकाकर्ता ने बड़ी हुई क्षमता सहित अतिरिक्त संयंत्र लगाया, और यद्यपि उत्पादन और बिक्री की मात्रा में वृद्धि हुई है, तथापि क्षमता उपयोग में कमी आई है। उत्पादन और बिक्री में बढ़ोतरी सिर्फ उन अतिरिक्त क्षमताओं को दर्शाती हैं जो अब स्थापित हुई हैं और वित्तीय घाटे की कीमत पर हैं।
- viii. मालसूची के स्तर 2014-15 और 2015-16 की तुलना में पीओआई में अधिक हैं। घरेलू उद्योग अतिरिक्त संयंत्र सुविधा के साथ अपने उत्पादन में वृद्धि करने में सक्षम था।
- ix. घरेलू उद्योग के साथ ही साथ पूरे भारतीय उत्पादकों की बाजार हिस्सेदारी में क्षति अवधि में वृद्धि हुई है। यद्यपि संबद्ध देश से आयात का बाजार हिस्सा घट गया है, फिर भी यह क्षति अवधि के दौरान काफी अधिक रहा है।
- x. उत्पादन में वृद्धि के साथ घरेलू उद्योग की उत्पादकता में वृद्धि हुई है।
- xi. उत्पादन, बिक्री, क्षमता उपयोग और बाजार हिस्सेदारी के मामले में घरेलू उद्योग ने सकारात्मक वृद्धि देखी है। तथापि, घरेलू उद्योग के लाभ, निवेश और नकद लाभ में वृद्धि पाटित आयातों की मौजूदगी के कारण काफी नकारात्मक रही थी।
- xii. अनेक कीमत मापदंडों के संबंध में घरेलू उद्योग की वृद्धि नकारात्मक हो गई है। अंतिम और साथ ही अंतिम चरण में आयात की उपस्थिति से घरेलू उद्योग के लिए कीमतों में कमी हो रही है।
- xiii. बाजार में ओ एसिड के पाटन को देखते हुए ओ एसिड के कारण क्षति के संबंध में, याचिकाकर्ता को अपने उत्पादन का उपयोग नहीं करते हुए संबद्ध देश से ओ एसिड आयात करना पड़ा था। इस प्रकार, क्षति की इतनी मात्रा के लिए ओ एसिड के पाटन को जिम्मेदार नहीं ठहराया जा सकता है। किसी भी मामले में, यह मानते हुए कि ओ एसिड के पाटन ने भी याचिकाकर्ता को क्षति पहुंचाई है, तो इससे ऑफ़लाक्ससिन के आयात की वजह से पाटन और क्षति के बीच का कारणात्मक संबंध नहीं टूटता है।
- xiv. घरेलू उद्योग के बहुत ही नगण्य निर्यात हैं, और याचिकाकर्ता के लिए निर्यात लक्ष्य बाजार नहीं है। इसके अलावा, घरेलू प्रचालनों के लिए अलग-अलग जानकारी प्रदान की गई है, इसलिए निर्यात निष्पादन घरेलू उद्योग को क्षति का कारण नहीं हो सकता है।

छ. 2 प्रतिवादी हितबद्ध पक्षों के विचार

30. निर्यातकों ने क्षति और कारणात्मक संबंध के बारे में निम्नलिखित अनुरोध और/या टिप्पणियां की हैं -

- i. संबद्ध वस्तु का पहुंच मूल्य, संबद्धवस्तु के लिए आवेदक की निवल बिक्री प्राप्ति से काफी अधिक है। जांच अवधि के दौरान आधार वर्ष की तुलना में आयात कीमतों में लगभग 10% तक वृद्धि हुई है। अतः आवेदक को आयातों से कीमत संबंधी क्षति नहीं हो सकती है।
- ii. पूर्ण रूप से और/या भारत में उत्पादन या उपभोग के संबंध में ऑफ़लाक्ससिन के आयात में महत्वपूर्ण गिरावट आई है। याचिकाकर्ता की तुलना में अन्य उत्पादकों की घरेलू बिक्री में कई गुना वृद्धि हुई है। इसके लिए घरेलू प्रतिस्पर्धा के कारण कीमतों में कमी को जिम्मेदार ठहराया जा सकता है विशेषकर इस तथ्य पर विचार करते हुए कि इस अवधि में आयात में गिरावट आई है।
- iii. आवेदक ने यह दावा नहीं किया है कि कथित पाटित आयातों के कारण कम कीमत पर बिक्री हुई है। तदनुसार, यह सिद्ध करने के लिए रिकार्ड पर कोई दस्तावेजी साक्ष्य नहीं है कि संबद्ध वस्तु के एनआईपी से कम पर आयात किया जा रहा है।
- iv. संबद्ध वस्तु का पहुंच मूल्य संबद्ध वस्तु के लिए बिक्रीलागत के अनुरूप है। इसके विपरीत, आवेदक बिक्री की लागत में वृद्धि के साथ बिक्री कीमत का तालमेल बनाए रखने में असफल रहा, इसके बावजूद संबद्ध वस्तु का पहुंच मूल्य उच्च स्तर पर बना रहा।
- v. आवेदक के कार्यनिष्पादन में समग्र रूप से सुधार हुआ है। उत्पादन, घरेलू बिक्री, क्षमता उपयोग, लाभ (कर-पूर्व) और नियोजित पूंजी पर आय में वृद्धि हुई है। आवेदक ने उत्पादन क्षमता को लगातार आधार पर बढ़ाया है; इसलिए, आवेदकों के विकास पर कोई प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ा है।
- vi. आवेदक की क्षति आवेदक द्वारा ऑफ़लाक्ससिन के निर्यात के कारण है। प्राधिकारी को ऐसे निर्यातों के कारण आवेदक को हुई क्षति को अलग करना चाहिए।
- vii. घरेलू उद्योग ने आरंभ से पहले और उत्पादन शुरू होने के बाद भी ओ-एसिड का आयात किया है, इसलिए यह सिद्ध होता है कि घरेलू मांग को पूरा करने के लिए कोई सुसंगत उत्पादन नहीं है।

- viii. भारत में ओ-एसिड के आयात के कारण आवेदक को हुई क्षति को ऑफलाक्सासिन के आयात के संबंध में क्षति मार्जिन के निर्धारण के उद्देश्य से अलग किया जाना चाहिए। आवेदक एक बहु-उत्पाद कंपनी है, जो साझी उत्पादन सुविधाओं में ओ-एसिड और ऑफलाक्सासिन का उत्पादन करता है। इसलिए, विभिन्न उत्पादों के कारण क्षति को अलग-अलग किया जाना अत्यंत महत्वपूर्ण है।
- ix. संबद्ध वस्तु के लिए एनआईपी की गणना के लिए प्राधिकारी को अंतरराष्ट्रीय कीमत या ओ-एसिड की आयात कीमत पर विचार करना चाहिए।
- x. आवेदक घरेलू उत्पाद की घटिया गुणवत्ता के कारण घरेलू बिक्री कीमत बढ़ाने में विफल रहा है। संबद्ध वस्तु के भारतीय उपयोगकर्ता घटिया गुणवत्ता के कारण स्वदेशी निर्माताओं से संबद्ध वस्तु खरीदने के लिए तैयार नहीं हैं।
- xi. नियोजित पूंजी के दोनों घटकों पर समान रूप से 22% को अपनाकर आय की गणना पूरी तरह से गलत है और इसकी समीक्षा की जानी चाहिए।

प्राधिकारी द्वारा जाँच

31. प्राधिकरण ने विभिन्न इच्छुक पार्टियों द्वारा बनाई गई सबमिशन का ध्यान रखा है।

- i. आयात की मात्रा के संबंध में निर्यातकों का बयान सही है कि पीओआई के दौरान निर्यात की मात्रा आधार वर्ष (2013-14) में मात्रा से कम है। घरेलू उद्योग की बिक्री में 46% की वृद्धि हुई है और 102% से अन्य भारतीय उत्पादकों की संख्या में वृद्धि हुई है।
- ii. घरेलू उद्योग द्वारा विषय वस्तु का निर्यात केवल 8 लाख टन है जबकि घरेलू बाजार में 344 लाख टन की बिक्री POI के बीच है। घरेलू परिचालनों के लिए अलग-अलग जानकारी की जांच की गई है ताकि चोटों के निर्धारण के लिए जांच की जा सके और इसलिए मामूली निर्यात प्रदर्शन ने किसी भी तरह से विश्लेषण को प्रभावित नहीं किया है।
- iii. घरेलू उद्योग का तर्क है कि चीन से ओ-एसिड और ऑफलाक्सासिन के आयात मूल्य में महत्वपूर्ण गिरावट आई है, क्योंकि चीनी उत्पादकों से आवेदक बाजार की रणनीति के कारण याचिकाकर्ता को घायल करने के इरादे से आक्रामक बाजार की रणनीति का परीक्षण किया गया है। यह उल्लेखनीय है कि ऑफलाक्सासिन की कीमत भी कम है कि ऑफलाक्सासिन के निर्माण के लिए आवश्यक कच्चे माल की सामान्य कीमत। ओ-एसिड के आयात के खिलाफ हाल ही में निष्कर्ष निकाली गई जांच के चलते प्राधिकरण ओ-एसिड की कीमतों और ओ-एसिड की घरेलू कीमतों पर कब्जा कर रहा है और यह नोट किया गया है कि ऑफलाक्सासिन चीनी निर्यातकों द्वारा भारत में निर्यात किया गया है जो कि कीमतों से कम है ओ-एसिड की कीमतें
- iv. ओ-एसिड और ऑफलाक्सासिन के कारण होने वाली चोट को दो अलग-अलग जांचों के तहत अलग से विश्लेषण किया गया है जैसा कि विरोधी इच्छुक पार्टियों ने किया है।

32. कच्ची सामग्री और क्षति रहित कीमत (एनआईपी) का अंतरण कीमत निर्धारण: चूंकि घरेलू उद्योग भी कच्ची सामग्री का उत्पादक और आबद्ध उपयोगकर्ता है, इसलिए क्षति रहित कीमत की गणना करते समय प्राधिकारी द्वारा स्थानांतरण मूल्य के मुद्दे की विशेषकर जांच की गई है। ऑफलाक्सासिन और ओ-एसिड के पाटन के संबंध में प्राधिकारी दो समानांतर जांच कर रहे हैं। ओ-एसिड के मामले में हितबद्ध पक्षों द्वारा दायर की गई जानकारी पर भी विचार किया जा रहा है और वर्तमान जांच के उद्देश्य के लिए जहां भी उपयुक्त है, वहां इन पर भी विचार किया गया है। प्राधिकारी ने ओलाक्सासिन और ओ-एसिड दोनों के संबंध में घरेलू उद्योग के लिए एनआईपी को निर्धारित किया है। प्राधिकारी द्वारा अपनाया गया स्थानांतरण मूल्य ओ एसिड (बिना किसी लाभ मार्जिन) के उत्पादन की सामान्य लागत है, जो कि याचिकाकर्ता द्वारा दावा किए गए स्थानांतरण मूल्य से कम है।

33. एडी नियमों को मात्रा और मूल्य प्रभाव दोनों की जांच करके चोट की जांच करने के लिए प्राधिकरण की आवश्यकता होती है। चोटों का निर्धारण दोनों (ए) को छोड़ दिया आयातों की मात्रा और घरेलू सामान में घरेलू बाजार में कीमतों पर दम पर आयात का प्रभाव और (बी) घरेलू उद्योगों पर इन आयातों के परिणामस्वरूप प्रभाव का शामिल है। डंप किए गए आयातों की मात्रा के संबंध में, प्राधिकरण को यह विचार करना होगा कि क्या भारत में उत्पादन या खपत के मुकाबले सही संदर्भ या रिश्तेदार के रूप में गिरावट के आयात में काफी वृद्धि हुई है या नहीं। कीमतों पर पंपों के आयात के प्रभाव के संबंध में प्राधिकरण को यह विचार करना आवश्यक है कि क्या भारत में समान उत्पाद की कीमत की तुलना में डंप किए गए आयातों की कीमतों में गिरावट का एक महत्वपूर्ण मूल्य रहा है या क्या इस तरह के आयात का असर अन्यथा है या नहीं एक महत्वपूर्ण डिग्री तक कीमतों में गिरावट या कीमतों में वृद्धि को रोकने के लिए जो अन्यथा किसी महत्वपूर्ण डिग्री के लिए होता।

34. घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के परिणामी प्रभाव के संबंध में पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध II का पैरा (iv) निम्नानुसार है : -

"संबंधित घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के प्रभाव की जांच में बिक्री, लाभ, उत्पादन, बाजार हिस्से, उत्पादकता, निवेश पर आय या क्षमता उपयोग में स्वाभाविक और संभावित गिरावट, सहित उद्योग की स्थिति पर प्रभाव डालने वाले सभी संगत आर्थिक कारकों और संकेतकों, घरेलू कीमतों, पाटन मार्जिन की मात्रा, नकद प्रवाह पर वास्तविक और संभावित नकारात्मक प्रभाव, मालसूची, रोजगार, मजदूरी, वृद्धि पूंजी निवेश जुटाने की क्षमता को प्रभावित करने वाले कारकों का मूल्यांकन शामिल होगा।"

35. यह आवश्यक नहीं है कि क्षति संबंधी सभी मापदंड में विकृति प्रदर्शित हो। कुछ मापदंडों में विकृति हुई जबकि कुछ में सुधार हो सकता है। निर्दिष्ट प्राधिकारी क्षति संबंधी सभी मापदंडों पर विचार करते हैं और उसके बाद निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि क्या घरेलू उद्योग को पाटन के कारण क्षति हुई है अथवा नहीं।

36. प्राधिकारी ने क्षति संबंधी मापदंडों की अनुरोधों में दिए गए तथ्यों और तर्कों पर विचार करते हुए वस्तुनिष्ठ ढंग से जांच की है।

मांग का आकलन

37. इस प्रयोजनार्थ भारत में उत्पाद की मांग या स्पष्ट खपत को भारतीय उत्पादकों की घरेलू बिक्रियों और सभी स्रोतों से आयातों के योग के रूप में लिया जाता है। संबद्ध देश से आयातों का भारत में मांग/खपत में हिस्सा प्राधिकारी द्वारा निम्नानुसार निर्धारित किया गया है -

विवरण	इकाई	2013-14	2014-15	2015-16	पीओआई
संबद्ध देश से आयात	एमटी	346	398	273	320
अन्य देश से आयात	एमटी	0	0	0	1
घरेलू उद्योग की बिक्रियां	एमटी	304	383	425	443
अन्य भारतीय उत्पादकों की बिक्री	एमटी	170	315	328	343
कुल	एमटी	820	1,096	1,026	1,107

38. प्राधिकरण का कहना है कि चोट की अवधि में मांग में वृद्धि हुई है और आधार वर्ष की तुलना में आयात में कमी आई है। आधार वर्ष की तुलना में अन्य भारतीय उत्पादकों की बिक्री पीओआई के दौरान दोगुनी हो गई है, जबकि घरेलू उद्योग ने 46% की वृद्धि देखी है।

पाटित आयातों का मात्रात्मक प्रभाव - आयात मात्रा और संबद्ध देश का हिस्सा

39. पाटित आयातों की मात्रा के संबंध में प्राधिकारी के लिए इस बात पर विचार करना अपेक्षित है कि क्या पाटित आयातों में समग्र रूप से या भारत में उत्पादन या खपत के संबंध में भारी वृद्धि हुई है। प्राधिकारी ने डीजीसीआईएंडएस द्वारा प्रदत्त सौदा-वार आयात आकड़ों के आधार पर संबद्ध देश और अन्य देशों से संबद्ध वस्तु के आयातों की मात्रा की जांच की है। क्षति अवधि के दौरान संबद्ध वस्तु की आयात मात्रा और पाटित आयातों का हिस्सा निम्नानुसार है -

विवरण	इकाई	2013-14	2014-15	2015-16	पीओआई
संबद्ध देश	एमटी	346	398	273	320
अन्य देश	एमटी	0	0	-	1
कुल	एमटी	347	398	273	321
कुल आयातों में आयातों का हिस्सा					
संबद्ध देश	%	100	100	100	99.69
अन्य देश	%	0	0	0	0.31
निम्न के संबंध में संबद्ध देश के आयात					
भारतीय उत्पादन	%	77	56	36	39
खपत	%	42	36	27	29

40. यह पाया जाता है कि आधार वर्ष की तुलना में, 2014-15 में आयात में वृद्धि हुई, उसके बाद 2015-16 में गिरावट आई और पीओआई के दौरान एक बार फिर बढ़ी। इसके अलावा, प्रवृत्ति की जांच के लिए पोस्ट पीओआई के लिए डेटा की जांच की गई और यह नोट किया गया है कि 2016-17 के दौरान आयात 223 लाख रुपये 1775 रुपये प्रति किलोग्राम था। लगभग संपूर्ण आयात विषय देश से हैं पीओआई में उत्पादन और उपभोग के संबंध में आयात भी महत्वपूर्ण हैं।

घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों का कीमत प्रभाव

41. जहां तक कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव का संबंध है, नियमावली के अनुबंध-II (ii) में निम्नानुसार निर्धारित है :

“जहां तक नियम 18 के उप नियम (2) में किए गए उल्लेखानुसार कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव का संबंध है, प्राधिकारी इस बात पर विचार करेंगे कि क्या भारत में समान उत्पाद की कीमत की तुलना में पाटित आयातों के कारण कीमत में अत्यधिक कटौती हुई है अथवा क्या ऐसे आयातों के प्रभाव के कारण कीमत में होने वाली वृद्धि में अन्यथा काफी अधिक ह्रास हुआ है अथवा कीमत में होने वाली उस वृद्धि में रूकावट आई है जिसमें अन्यथा काफी हद तक वृद्धि हो गई होती। ”

42. घरेलू उद्योग की कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव की जाँच कीमत कटौती, कम कीमत पर बिक्री, कीमत ह्रास और कीमत न्यूनीकरण, यदि कोई हो, के संदर्भ में जाँच की गई है।

कीमत कटौती

43. यह निर्धारित करने के लिए क्या आयातों के कारण बाजार में घरेलू उद्योग की कीमतों में कटौती हो रही है, प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग की निवल बिक्री प्राप्ति के साथ आयातों की पंहुच कीमत की तुलना की है। इस संबंध में संबद्ध देश से उत्पाद के पंहुच मूल्य और घरेलू उद्योग की बिक्री प्राप्ति की व्यापार के समान स्तर पर सभी छूटों और करों के निवल पर तुलना की गई है। घरेलू उद्योग की कीमतों का कारखाना-द्वारा स्तर पर निर्धारित की गई हैं।

विवरण	इकाई	चीन
पंहुच कीमत	रु./किग्रा.	2,415
निवल बिक्री कीमत	रु./किग्रा.	***
कीमत कटौती	रु./किग्रा.	***
कीमत कटौती	%	***
कीमत कटौती %	रेंज	1-10

44. प्राधिकरण नोट करता है कि कीमत कम दबाव सकारात्मक है घरेलू उद्योग ने कहा है कि वे आयात की कीमतों से मेल खाने के लिए बाध्य हैं हालांकि, यह मजबूर मूल्य निर्धारण का निर्णायक संकेत नहीं है क्योंकि वे अन्य भारतीय उत्पादकों से प्रतिस्पर्धा का सामना कर रहे हैं जो घरेलू उद्योग के रूप में लगभग समान बाजार रखते हैं।

कम कीमत पर बिक्री

45. प्राधिकारी ने संबद्ध देश से पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग द्वारा झेली गई कम कीमत पर बिक्री की भी जाँच की है। इस प्रयोजनार्थ, घरेलू उद्योग के लिए निर्धारित की गई बिक्री लागत की तुलना आयातों की पंहुच कीमत के साथ की गई है। कीमत कटौती के प्रयोजनार्थ विचार की गई पंहुच कीमत को भी कम कीमत पर बिक्री निर्धारित करने के प्रयोजनार्थ अपनाया गया है। घरेलू उद्योग की बिक्री की भारित औसत लागत के साथ आयातों की भारित औसत पंहुच कीमत की तुलना निम्नानुसार है :

विवरण	इकाई	चीन
क्षति रहित कीमत	रु./किग्रा.	***
पंहुच मूल्य	रु./किग्रा.	2,415
क्षति मार्जिन	रु./किग्रा.	***
क्षति मार्जिन %	%	***
क्षति मार्जिन %	रेंज	10-20

46. यह नोट किया जाता है कि आयातों की पंहुच कीमत घरेलू उद्योग की क्षति रहित कीमत से कम है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग ने संबद्ध देश से संबद्ध वस्तु के आयातों के कारण जाँच अवधि के दौरान कम कीमत पर बिक्री को झेला है।

कीमत ह्रास और न्यूनीकरण

47. यह निर्धारित करने के लिए कि क्या पाटित आयातों द्वारा घरेलू कीमत का ह्रास हुआ है या क्या ऐसे आयातों का प्रभाव कीमत में पर्याप्त स्तर तक गिरावट करना है अथवा कीमत में होने वाली उस वृद्धि को रोकना है जो अन्यथा काफी हद तक बढ़ गई होती, प्राधिकारी ने क्षति अवधि के दौरान लागतों और कीमत में परिवर्तनों पर विचार किया है। इस स्थिति को नीचे तालिका के अनुसार दर्शाया गया है।

विवरण	इकाई	2013-14	2014-15	2015-16	पीओआई
बिक्री लागत	रु./किग्रा.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	104	112	120
बिक्री कीमत	रु./किग्रा.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	106	110	108

48. यह नोट किया जाता है कि बिक्री लागत में क्षति अवधि और पीओआई दोनों के दौरान प्रत्येक वर्ष वृद्धि हुई है। तथापि, घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत में 2015-16 तक वृद्धि हुई परंतु पीओआई में गिरावट आई। यह भी नोट किया जाता है कि बिक्री कीमत 2014-15 को छोड़कर पूरी क्षति अवधि के दौरान बिक्री लागत के स्तर से कम रही है। इस प्रकार आयातों के कारण घरेलू बाजार में घरेलू कीमतों पर ह्रासकारी और न्यूनकारी प्रभाव पड़ा है।

घरेलू उद्योग के आर्थिक मापदंडों संबंधी प्रभाव

49. पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-11 में यह अपेक्षित है कि क्षति के निर्धारण में समान उत्पाद के घरेलू उत्पादकों पर इन आयातों के परिणामी प्रभाव की तथ्यपरक जांच शामिल होगी। नियमों में आगे यह उपबंध है कि घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के प्रभाव की जांच में समस्त संगत आर्थिक मापदंडों और बिक्री, लाभ, उत्पादन, बाजार हिस्से, उत्पादकता, निवेश पर आय अथवा क्षमता उपयोग में वास्तविक एवं संभावित गिरावट सहित घरेलू उद्योग की स्थिति पर प्रभाव डालने वाले संकेतकों; घरेलू कीमतों, पाटन मार्जिन की मात्रा, नकद प्रवाह, मालसूची, रोजगार, मजदूरी, वृद्धि, पूंजी निवेश जुटाने की क्षमता पर वास्तविक और संभावित नकारात्मक प्रभावों का तथ्यपरक एवं निष्पक्ष मूल्यांकन शामिल होगा। घरेलू उद्योग के निष्पादन की जांच से यह पता चलता है कि घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है। घरेलू उद्योग से संबंधित विभिन्न क्षति मापदंडों पर निम्नानुसार चर्चा की गई है :-

क) क्षमता, उत्पादन, क्षमता उपयोग और बिक्रियां

50. उत्पादन, घरेलू बिक्रियों, क्षमता और क्षमता उपयोग के संबंध में घरेलू उद्योग का कार्यनिष्पादन निम्नानुसार है :-

विवरण	इकाई	2013-14	2014-15	2015-16	पीओआई
क्षमता	एमटी	400	480	660	720
प्रवृत्ति	सूची	100	120	165	180
उत्पादन	एमटी	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूची	100	139	153	171
क्षमता उपयोग	%	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूची	100	116	93	95
बिक्री मात्रा	एमटी	304	383	425	443
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	126	140	146

51. यह नोट किया गया है कि याचिकाकर्ता ने चोट की अवधि के दौरान अपनी क्षमता बढ़ा दी है। घरेलू उद्योग की उत्पादन क्षमता और घरेलू उद्योग की प्राकृतिक क्षमता के रूप में वृद्धि हुई है और कच्चे माल का उत्पादन शुरू करना, यानी, हे एसिड। हालांकि, मांग के बावजूद घरेलू उद्योग अभी भी अपनी पूरी क्षमता का उपयोग करने में सक्षम नहीं है। अन्य भारतीय उत्पादकों ने अपने उत्पादन और बिक्री में भी वृद्धि की है, जो आधार वर्ष की तुलना में पीओआई के दौरान दोगुनी हो गई है। घरेलू उद्योग और अन्य भारतीय उत्पादकों को कुल भारतीय मांग का 71% हिस्सा मिल जाता है। विभिन्न भारतीय उत्पादकों में से, मेसर्स दानोफार्म केमिकल प्राइवेट लिमिटेड ने समर्थन पत्र प्रस्तुत किया है, लेकिन अन्य ने न तो समर्थन किया है और न ही याचिका का विरोध किया है।

ख) लाभ, नियोजित पूंजी पर आय और नकद लाभ

52. घरेलू उद्योग की बिक्री लागत, बिक्री कीमत, लाभ/हानि, नकद लाभ और निवेश पर आय का निम्नानुसार विश्लेषण किया गया है :

विवरण	इकाई	2013-14	2014-15	2015-16	पीओआई
बिक्री लागत	रू./किग्रा	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	104	112	120
बिक्री कीमत	रू./किग्रा	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	106	110	108
प्रति इकाई लाभ/(हानि)	रू./किग्रा	(***)	***	(***)	(***)
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	(100)	24	(317)	(1,072)
लाभ/(हानि)- कुल	लाख रू.	(***)	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	(100)	31	(451)	(1,584)
नकद लाभ	लाख रू.	(***)	***	(***)	(***)
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	(100)	166	(454)	(2,319)
व्याज और कर पूर्व लाभ	लाख रू.	***	***	(***)	(***)
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	233	(31)	(555)
निवेश पर आय	%	***	***	(***)	(***)
प्रवृत्ति	रेंज	5-15	5-15	(5)-5	(25)-(15)

53. प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग को 2013-14 में कम घाटे हुए, 2014-15 में उसने लाभ कमाया और उसके बाद 2015-16 और उसके बाद से उसे भारी घाटे होने शुरू हो गये। पीओआई में इन घाटों में और वृद्धि हो गई।

54. व्याज पूर्व लाभ, नकद लाभ और नियोजित पूंजी पर आय में भी यही प्रवृत्ति रही है। निवेश में आय पीओआई के दौरान काफी नकारात्मक स्तर पर रही है।

ग) मांग में बाजार हिस्सा

55. घरेलू उद्योग की मांग में बाजार हिस्से के संबंध में पाटित आयातों के प्रभाव की निम्नानुसार जाँच की गई है :

विवरण	इकाई	2012-13	2013-14	2014-15	पीओआई
संबद्ध देश- चीन से आयात	%	42	36	27	29
अन्य देश से आयात	%	0	0	0	0
घरेलू उद्योग की बिक्रियां	%	37	35	41	40
अन्य भारतीय उत्पादकों की बिक्री	%	21	29	32	31

56. प्राधिकरण नोट करता है कि घरेलू उद्योग और अन्य भारतीय उत्पादकों की बाजार हिस्सेदारी संपूर्ण चोट अवधि के दौरान बढ़ी है। हालांकि, घरेलू वस्तुओं के आयात को पूरा करने के लिए पर्याप्त क्षमता के बावजूद विषय वस्तु के आयात में अभी भी महत्वपूर्ण बाजार हिस्सेदारी है। इस प्रकार यह देखा जाता है कि उत्पाद के डंपिंग से घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से पर असर पड़ सकता है। तथ्य यह है कि अन्य भारतीय उत्पादकों ने अपने बाजार हिस्सेदारी में वृद्धि की है, घरेलू उद्योग के शेयरों का मूल्यांकन करने के लिए भी प्रासंगिक है

घ) रोजगार, मजदूरी और उत्पादकता

57. रोजगार, मजदूरी और उत्पादकता के संबंध में स्थिति निम्नानुसार है :

विवरण	इकाई	2013-14	2014-15	2015-16	पीओआई
कर्मचारियों की संख्या	संख्या	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूची	100	115	117	117
मजदूरी	लाख रुपये	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूची	100	152	200	206
प्रति कर्मचारी उत्पादकता	किग्रा./सं.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीवद्ध	100	121	131	147
प्रतिदिन उत्पादकता	किग्रा./प्रतिदिन	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीवद्ध	100	139	153	171

58. प्राधिकरण का कहना है कि आधार वर्ष के मुकाबले पीओआई के दौरान रोजगार स्तर में वृद्धि हुई है और इसने मजदूरी का स्तर भी बढ़ाया है जो कि क्षमता बढ़ाने और उत्पादन के कारण हो सकता है। इसके अलावा, प्रति दिन उत्पादकता और प्रति कर्मचारी चोट की अवधि और पीओआई से भी बढ़ोतरी कर रहे हैं। हालांकि, यह डंपिंग और परिणामी चोट के प्रभाव का संकेत नहीं है

ड) मालसूची

59. संबद्ध वस्तु की मालसूची से संबंधित आकड़ों को नीचे तालिका में दर्शाया गया है :

विवरण	इकाई	2013-14	2014-15	2015-16	पीओआई
आरंभिक स्टॉक	एमटी	***	***	***	***
अंतिम स्टॉक	एमटी	***	***	***	***
औसत स्टॉक	एमटी	15	4	4	19
प्रवृत्ति	सूची	100	26	30	129

60. प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग के पास मालसूची का स्तर पीओआई के दौरान काफी बढ़ गया है।

च) पाटन की मात्रा

61. यह नोट किया जाता है कि संबद्ध देश से आयात पाटित कीमतों पर भारतीय बाजार में प्रवेश कर रहे हैं और पाटन का मार्जिन न्यूनतम सीमा से काफी अधिक है।

छ) पूंजी निवेश जुटाने की क्षमता

62. याचिकाकर्ता ने क्षमता में वृद्धि की है, हालांकि वे इसे पूरी तरह से उपयोग नहीं कर पा रहे हैं और नुकसान उठाना पड़ रहा है। उनका दावा है कि इससे अधिक विस्तार के लिए पूंजी जुटाने की उनकी क्षमता पर असर पड़ेगा, हालांकि, प्राधिकरण ने कहा है कि घरेलू उद्योग भी कई अन्य दवाओं का निर्माण कर रहा है, इसलिए विषय वस्तु के प्रदर्शन के आधार पर निष्कर्ष निकालना मुश्किल है।

ज) वृद्धि

63. साल दर साल आधार पर घरेलू उद्योग की वृद्धि से संबंधित आंकड़ों की जांच की गई है। प्राधिकरण का कहना है कि गिरावट की प्रवृत्ति पर उत्पादन के मामले में विकास और बिक्री की मात्रा सकारात्मक है। बिक्री मूल्य, पीबीआईटी और आरओआई भी गिरावट की प्रवृत्ति दिखा रहे हैं और पीओआई के दौरान नकारात्मक बन गए हैं। क्षमता का उपयोग, जो गिरावट दिखाया है, किसी भी सीधी चोट का संकेत नहीं है क्योंकि घरेलू उद्योग ने पूरी चोट अवधि और पीओआई के दौरान अपनी स्थापित क्षमता लगातार बढ़ा दी है।

1) घरेलू उद्योग को प्रभावित करने वाले कारक

64. विषय देश से आयात की कीमतों की जांच, लागत संरचना में परिवर्तन, घरेलू बाजार में प्रतिस्पर्धा, घरेलू बाजार में घरेलू उद्योग की कीमतों को प्रभावित करने वाले दमदार आयातों के अलावा अन्य कारकों का उपयोग किया गया है। आंकड़े बताते हैं कि विषय देश से आयात किए गए विषय वस्तु के उतराए गए मूल्य, घरेलू बाजार की बिक्री मूल्य और गैर-हानिकारक कीमत से नीचे है, जिससे भारतीय बाजार में कीमतों में कटौती और कीमतों में कमी आ रही है। प्राधिकरण का कहना है कि सामान्य रूप से विचाराधीन उत्पाद के मूल्य प्रमुख कच्चे माल की कीमतों के साथ मिलकर चलना चाहिए और घरेलू उद्योग इन कीमतों की कीमतों पर विचार कर रहा है और आयात की कीमत गिर गई है। घरेलू उद्योग ने दावा किया है कि उन्हें अपने मूल्यों को बाजार मूल्यों के साथ संरेखित करने के लिए मजबूर किया जाता है, जो विषय देश से विदेशी उत्पादकों / निर्यातकों द्वारा की जाने वाली कीमतों से तय होता है। इस प्रकार, देश के मूल्यों के निर्धारण के लिए विषय देश के विषय वस्तु का उतरा मूल्य एक महत्वपूर्ण कारक है। प्राधिकरण का कहना है कि घरेलू उद्योग को सामानों के आयात से प्रभावित किया गया है, साथ ही साथ अन्य भारतीय उत्पादकों ने आधार वर्ष के मुकाबले पीओआई के दौरान अपने उत्पादन और बिक्री में उल्लेखनीय वृद्धि की है। घरेलू उद्योग और अन्य भारतीय उत्पादकों की कुल भारतीय मांग में 71% हिस्सेदारी होती है और इसलिए घरेलू बाजार में सभी खिलाड़ियों के कारण कीमतें होती हैं।

अन्य ज्ञात कारक और कारणात्मक संबंध

65. प्राधिकारी ने पाटन और घरेलू उद्योग को हुई क्षति के बीच कारणात्मक संबंधी की जाँच करने के लिए पाटनरोधी नियमावली के अधीन सूचीबद्ध ऐसे अन्य कारकों की जाँच की है जिनसे घरेलू उद्योग को क्षति हो सकती हो।

66. तीसरे देशों से आयात प्राधिकारी ने सौदा-वार आधार पर डीजीसीआईएंडएस से प्राप्त संबद्ध वस्तु के आयात आकड़ों की जाँच की है और नोट करते हैं कि लगभग समस्त आयात अन्य देश के आयात से आयात की तुलना में संबद्ध देश से हुए हैं।

67. मांग में संकुचन: संबद्ध वस्तु की मांग में वृद्धि हुई है। इस प्रकार मांग में संभावित गिरावट से घरेलू उद्योग को क्षति होने की संभावना नहीं है।

68. व्यापार प्रतिबंधात्मक प्रथाएं ऐसी कोई व्यापार प्रतिबंधात्मक प्रथाएं नहीं हैं जिनसे घरेलू उद्योग को क्षति हो सकती हो।

69. प्रौद्योगिकी में विकास: घरेलू उद्योग द्वारा अपनायी गई मौजूदा प्रौद्योगिकी और प्रक्रिया अंतिम उत्पाद के उत्पादन के संबंध में विदेशी उत्पादकों से तुलनीय है। याचिकाकर्ता ने हाल में क्षमता में वृद्धि की है।

70. खपत की प्रवृत्ति में परिवर्तन: विचाराधीन उत्पाद के संबंध में खपत की प्रवृत्ति में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। खपत की प्रवृत्ति में परिवर्तन से घरेलू उद्योग को क्षति होने की संभावना नहीं है।

71. निर्यात कार्यानिष्पादन: घरेलू उद्योग के निर्यात काफी कम हैं, और निर्यात उनके लक्ष्य बाजार नहीं हैं। इसके अलावा घरेलू प्रचालनों के लिए अलग सूचना की जाँच क्षति के निर्धारण के लिए की गई है इसलिए निर्यातक कार्यानिष्पादन को घरेलू उद्योग को हुई क्षति का कारण नहीं माना जा सकता है।

72. घरेलू उद्योग की उत्पादकता: प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग की उत्पादकता में वृद्धि हुई है। उत्पादकता में गिरावट घरेलू उद्योग को हुई क्षति का कारण नहीं है।

73. अन्य उत्पादों के संबंध में घरेलू उद्योग का प्रदर्शन: घरेलू उत्पाद द्वारा उत्पादित और बेचे जाने वाले अन्य उत्पादों के प्रदर्शन ने घरेलू उद्योग के प्रदर्शन के प्राधिकरण द्वारा किए गए मूल्यांकन को प्रभावित नहीं किया है। प्राधिकरण द्वारा विचारित जानकारी केवल विचाराधीन उत्पाद के संबंध में है यह अन्य इच्छुक पार्टियों द्वारा तर्क दिया गया है कि ओ एसडि का उत्पादन घरेलू उद्योग को चोट पहुंचा रहा है। इस संदर्भ में यह उल्लेखनीय है कि ओ एसडि वैधानिक विनियमन के अनुसार ऑफलॉक्ससिन संयंत्र में स्थानांतरित किया गया था। ओ-एसडि का अंतरण मूल्य सामान्यीकृत किया गया है और ऑलॉक्ससिन के खिलाफ मौजूदा जांच में चोट विश्लेषण के लिए ध्यान में रखा गया है और इसलिए ओ एसडि के कारण होने वाली चोट का कारण ऑफलॉक्ससिन को नहीं दिया जा सकता है। किसी भी मामले में, विषय देश के द्वारा विषय वस्तु के डंपिंग और घरेलू उद्योग के कारण होने वाली चोट के बीच पर्याप्त कारण कड़ी है।

कारणात्मक संबंध सिद्ध करने वाले कारक

74. क्षति अवधि में घरेलू उद्योग के कार्यनिष्पादन के विश्लेषण से पता चलता है कि संबद्ध देश से पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग का कार्यनिष्पादन खराब हुआ है। पाटित आयात और घरेलू उद्योग को हुई क्षति के बीच कारणात्मक सम्बन्ध निम्नलिखित आधार पर सिद्ध किया गया है:

- पाटित आयात में गिरावट आई और फिर से पीओआई में उनमें वृद्धि हुई और घरेलू उद्योग द्वारा क्षमता बढ़ाने के बावजूद वे काफी अधिक हैं।
- पाटित आयातों की वजह से कीमत में कमी ने घरेलू उद्योग को उसकी कीमतों कम करने के लिए विवश किया है;
- संबद्ध देश से पाटित आयात से कीमत में गिरावट के परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग के वित्तीय घाटे में भारी वृद्धि हुई है।
- वित्तीय हानियों और नियोजित पूंजी पर नकारात्मक रिटर्न मुख्य रूप से पंप आयात का एक परिणाम है;
- कई घरेलू आर्थिक मापदंडों के मामले में घरेलू उद्योग की वृद्धि में गिरावट आई है
- प्राधिकरण ने घरेलू उद्योग के लिए गैर-हानिकारक मूल्य निर्धारित किया है। इस प्रयोजन के लिए प्राधिकरण ने कच्चा माल और उपयोग के सर्वोत्तम उपभोग मानकों को माना है। यह देखा जाता है कि कीमतों के नीचे का मूल्य सकारात्मक और महत्वपूर्ण है।
- नियमों के अनुबंध-III के प्रावधानों के अनुसार, प्राधिकरण ने अन्य कारकों के कारण घरेलू उद्योग से पीड़ित चोटों को अलग किया है और निकाला है।

ज. क्षति और क्षति मार्जिन की मात्रा

75. घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित संबद्ध वस्तु की प्राधिकारी द्वारा पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध III के अनुसार निर्धारित क्षतिरहित कीमत की तुलना जाँच अवधि के दौरान क्षति मार्जिन के निर्धारण के लिए संबद्ध देश से आयातों के पंधुच मूल्य के साथ की गई है और क्षति मार्जिन की गणना निम्नानुसार की गई है। प्राधिकारी ने आफलाक्सेसिन और ओ एसिड दोनों के संबंध में घरेलू उद्योग के लिए क्षतिरहित कीमत (एनआईपी) निर्धारित की है। इसके अलावा, प्राधिकारी ने पीयूसी की उत्पादन लागत, लाभ और एनआईपी निर्धारित करने में याचिकाकर्ता द्वारा प्रयुक्त अंतरण कीमत की सावधानीपूर्वक जाँच की गई है। इसके अलावा, याचिकाकर्ता द्वारा अपनाई गई अंतरण कीमत की तुलना प्राधिकारी द्वारा निर्धारित ओ एसिड की एनआईपी और देश में ओ एसिड की आयात कीमत के साथ की गई है। प्राधिकारी ने याचिकाकर्ता द्वारा बहन की गई ओ-एसिडकी वास्तविक उत्पादन लागत से काफी कम अंतरण कीमत पर विचार किया है, इसलिए आफलाक्सेसिन उत्पादन के लिए आबद्ध कच्ची सामग्री के बढ़ाये गए मूल्य के आरोप पर विधिवत रूप से ध्यान दिया गया है।

क्र. सं.	उत्पादक/निर्यातक	एनआईपी अम.डा./किग्रा	एलवी अम.डा./किग्रा	क्षति मार्जिन		
				अम.डा./किग्रा	(%)	रेंज
1.	झेजियांग ईस्ट-एशिया फार्मास्युटिकल कं. लिमिटेड	***	***	***	***	15-25
2.	झेजियांग अपीलो कंग्यू फार्मास्युटिकल कंपनी लिमिटेड	***	***	***	***	5-15
3.	कोई अन्य	***	***	***	***	25-35

76. यह देखा गया है कि संबद्ध देश के लिए क्षति मार्जिन सकारात्मक और काफी अधिक है।

झ. प्रकटन पश्चात टिप्पणियां

77. प्रकटन पश्चात अनुरोध हितबद्ध पक्षकारों से प्राप्त हुए हैं। उनमें उठाए गए मुद्दे जांच के दौरान पहले ही उठाए गए हैं और उनका समाधान उपयुक्त रूप से कर दिया गया है। हालांकि स्पष्टता के वास्ते हितबद्ध पक्षकार द्वारा किए गए अनुरोधों की जांच नीचे दिए गए अनुसार की गई है :

घरेलू उद्योग का अनुरोध

78. घरेलू उद्योग ने निम्नलिखित अनुरोध किए हैं:

- i. घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित ऑफ्लोसेक्सिन और संबद्ध देश से निर्यात किए गए उत्पाद में कोई अंतर नहीं है और याचिकाकर्ता का उत्पादन कुल भारतीय उत्पादन का एक बड़ा हिस्सा है।
- ii. संरक्षित सामान्य मूल्य का निर्धारण घरेलू उद्योग के लिए निर्धारित क्षतिरहित कीमत के आधार पर किया गया है। यह अनुरोध है कि उत्पादन की वास्तविक लागत पर विचार किए जाने की आवश्यकता है और न कि सामान्य मूल्य की संरचना के लिए नोशनल लागत पर।
- iii. आयात में 2014-15 में वृद्धि हुई, उसके बाद 2015-16 में गिरावट आई और एक बार फिर जांच की अवधि के दौरान इसमें वृद्धि हुई। आयातों से घरेलू उद्योग के समान वस्तु की कीमतों में कटौती हो रही है। आयातों का बाजार में घरेलू उद्योग की कीमतों पर दबाव और ह्रास का प्रभाव पड़ता है और इसके फलस्वरूप घरेलू उद्योग को घाटा होता है।
- iv. लाभ, नकद प्रवाह और निवेश पर आय के संबंध में घरेलू उद्योग के कार्य निष्पादन में बहुत अधिक गिरावट आई है।
- v. घरेलू उद्योग के कार्य निष्पादन में बिक्री की मात्रा, उत्पादन, क्षमता उपयोग और बाजार हिस्से के मामले में सुधार हुआ है हालांकि इसके बावजूद घरेलू उद्योग के कार्य निष्पादन में लाभ, नकद प्रवाह और निवेश पर आय के संबंध में बहुत अधिक गिरावट आई।
- vi. सामान्य व्यापार की स्थिति यह है कि लाभ, नकद प्रवाह और निवेश पर आय में बिक्री की मात्रा, उत्पादन, क्षमता उपयोग और बाजार हिस्से में सुधार के साथ प्रगति होती है। एक असामान्य बाजार स्थिति वह है जिसमें बिक्री की मात्रा, उत्पादन, क्षमता उपयोग और बाजार के हिस्से में सुधार के साथ लाभ, नकद प्रवाह और निवेश पर आय में गिरावट आती है। असामान्य व्यापार स्थिति पाटन संबंधी प्रथाओं के कारण होती है।
- vii. पाटनरोधी शुल्क का रूप पाटनरोधी की निर्धारित मात्रा होनी चाहिए और इस शुल्क को अम.डा. के रूप में लगाया जाना चाहिए।
- viii. हितबद्ध पक्षकारों का दावा यह है कि यदि कंपनी ने चोरी छुपे किसी उत्पाद को बेचा है तब उस उत्पाद में कोई लाभ अथवा घाटा नहीं हो सकता है। यह तर्क पूर्ण रूप से भ्रामक है। इस संबंध में यह स्पष्ट किया गया है कि याचिकाकर्ता ने इस देश में सांविधिक अपेक्षाओं के अनुरूप ओ-एसिड की सभी गुप्त बिक्री का मूल्यांकन किया है।
- ix. यह दावा कि ओ-एसिड के कारण क्षति हुई है और उसे अलग-अलग किए जाने की आवश्यकता है, सही नहीं है। यह अनुरोध किया जाता है कि कंपनी द्वारा रखे जाने वाले रिकॉर्डों के अनुसार दोनों उत्पादों (ओ एसिड और ऑफ्लोसेक्सिन) के लिए क्षति का निर्धारण अलग-अलग किया गया है।

प्रतिवादी हितबद्ध पक्षकारों के विचार:

79. विभिन्न प्रतिवादी हितबद्ध पक्षकारों के अनुरोधों का सारांश नीचे दिया गया है:

- i. प्राधिकारी उस स्थिति में आपूर्ति श्रृंखला के लिए अलग-अलग पाटन मार्जिन से इंकार नहीं कर सकता है जहां उत्पादक झेजियांग ईस्ट एशिया फार्मास्युटीकल कं. लि. और उसमें निर्यातक प्रतिवादी हो अर्थात् झेजियांग मेडिसिन एंड हेल्थ प्रोडक्ट्स इंपोर्ट एंड एक्सपोर्ट कंपनी लि. क्योंकि ये दोनों पक्षकार सहयोगी रहे हैं और वर्तमान जांचों में इन्होंने पूर्ण रूप से भाग लिया है। प्राधिकारी ने इन आधारों पर आपूर्ति श्रृंखला के लिए अलग-अलग शुल्क मार्जिन प्रदान नहीं किया कि वे केवल निर्यातक (प्रतिवादी) हैं और न कि संबद्ध वस्तुओं के उत्पादक हैं। जहां उत्पादक प्रत्यक्ष रूप से अथवा किसी निर्यातक के माध्यम से आपूर्ति कर रहे हों उस स्थिति में अलग-अलग शुल्क मार्जिन दो आपूर्ति श्रृंखलाओं के लिए नहीं दी जा सकती है जैसा कि प्राधिकारी द्वारा विगत अनेक मामलों में जैसे चीन से ओ-एसिड, चीन जन.गण., कोरिया, ताइवान, वियतनाम से एलास्टोमेरिक यार्न और ईरान, कतर और चीन जन.गण. से लीनियर एल्किल बेंजेन के मामले में किया गया है।
- ii. दि चाइना चैम्बर ऑफ कॉमर्स और इंपोर्ट एंड एक्सपोर्ट ऑफ मेडीसिन एंड हेल्थ प्रोडक्ट्स (सी सी सी एम एच पी आई ई) का उल्लेख एक पक्षकार द्वारा वर्तमान मामले में अनुरोध प्रपत्र भरे जाने के रूप में जारी किए गए प्रकटन विवरण में उल्लेख नहीं किया गया है।
- iii. दिसंबर, 2016 के बाद एन एम ई के रूप में चीन का बर्ताव चीन के एक्सेसन प्रोटोकॉल का उल्लंघन है। भारत के पास अब कोई कानूनी आधार गैर-बाजार पद्धति का उपयोग करते हुए चीन के उत्पादों के सामान्य मूल्य की गणना करने के लिए नहीं है। प्राधिकारी को चीन को बाजार अर्थव्यवस्था का दर्जा प्रदान करना चाहिए; पाटनरोधी करार के अनुच्छेद 2 के अनुसार सामान्य मूल्य की गणना करनी चाहिए और कंपनी द्वारा सामान्य मूल्य के निर्धारण के लिए दी गई लागतों और कीमतों से संबंधित आंकड़े लागू करने चाहिए।

- iv. ओ-एसिड, कच्चा माल के लिए अपेक्षाकृत अधिक लागत पर विचार किया गया है। याचिकाकर्ता द्वारा कच्चे माल का उत्पादन किया गया है और संबद्ध वस्तुओं के लिए गुप्त रूप से इसकी खपत की गई है और लागत योग 10 प्रतिशत पर इसका स्थानांतरण किया गया है जिसके फलस्वरूप अपेक्षाकृत अधिक लागत आई है। ओ-एसिड की आयात कीमत पर विचार किया जाना चाहिए।
- v. चीन से बढ़े हुए निर्यातों का दावा तथ्यात्मक रूप से गलत और मिथ्यापूर्ण है। बल्कि आयातों में गिरावट देखी गई है। आयातों में स्वतंत्र रूप में कोई वृद्धि नहीं हुई है बल्कि 31% की गिरावट आई है; मांग की तुलना में आयातों में कोई वृद्धि नहीं हुई है बल्कि 21% की गिरावट आई है; घरेलू उद्योग की बिक्री के मामले में आयातों में कोई वृद्धि नहीं हुई है बल्कि 61% की गिरावट आई है।
- vi. नियोजित पूंजी पर आय के दावे बढ़ा चढ़ाकर के पेश किए गए हैं। निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा निर्धारित एनआईपी भी बहुत अधिक है और यह वास्तविक स्थितियों के आधार पर नहीं है क्योंकि पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-3 के पैरा 4 के अनुसार उत्पादन की लागत के तत्व की जांच एनआईपी के लिए किया जाना अपेक्षित है। नियोजित औसत पूंजी पर एक उचित आय (कर पूर्व), ब्याज लागत के उचित होने की जांच की जा सकती है बशर्ते 22% आरओसीई सही नहीं है क्योंकि नियोजित पूंजी का ऋण भाग जिस पर 10-12% का ब्याज दर लगता है, 22% पर दिया गया है। इसके फलस्वरूप नियोजित पूंजी के निवल पूंजी हिस्से पर 22% से अधिक लाभ दिया गया है। मंदी के दौरान इस प्रकार का उच्च लाभ सही नहीं है। 22 प्रतिशत आरओसीई घरेलू उद्योग को अनुचित लाभ और संरक्षण देता है। इक्विटी पर 41% मार्जिन को उचित नहीं माना जा सकता है।

प्राधिकारी द्वारा जांच

80. यह नोट किया जाता है कि प्रकटन पश्चात चरण में उठाए गए मुद्दों की प्राधिकारी द्वारा उपर्युक्त संगत अनुच्छेदों में पहले ही जांच की जा चुकी है, हालांकि अनुरोधों की स्पष्टता के बावजूद उनका समाधान नीचे दिए गए अनुसार किया गया है :

- i. कच्चे माल की कीमत के संबंध में प्राधिकारी नोट करते हैं कि ओ-एसिड के उत्पादन की सामान्य लागत (बिना किसी लाभ मार्जिन के) के आधार पर ओ-एसिड का स्थानांतरण कीमत को प्राधिकारी द्वारा अपनाया गया है।
- ii. एनआईपी की गणना के संबंध में, प्राधिकारी नोट करते हैं कि एनआईपी और उत्पादन की लागत का निर्धारण दिनांक 1 मार्च, 2011 की सीमाशुल्क अधिसूचना सं. 15/2011-सी.शु. एन.टी.) के अनुबंध-3 और इस नियमावली के प्रावधानों तथा गणना के लिए इस निदेशालय में अपनाई जाने वाली समरूप पद्धति के अनुसार की गई है।
- iii. झेजियांग मेडिसिन एंड हेल्थ प्रोडक्ट्स इंपोर्ट एंड एक्सपोर्ट कंपनी लि. को अलग-अलग पाटन मार्जिन के संबंध में, प्राधिकारी इस बात पर पुनः जोर डालते हैं कि उत्तर की जांच कर ली गई थी और जांच किए जाने पर यह पाया गया है कि वे संबद्ध वस्तुओं के केवल निर्यातक हैं और न कि उत्पादक। वे भारत तथा अन्य देशों को निर्यात कर रहे हैं। परिशिष्ट-2 में दिए गए ब्याज के अनुसार, उन्होंने भारत में 5 खेप का निर्यात किया है। उसकी खरीद चीन में विभिन्न असंबंधित उत्पादकों से की गई थी और तब भारत में निर्यात किया गया था। केवल एक उत्पादक नामतः झेजियांग ईस्ट एशिया फार्मास्यूटीकल कं. लि. ने उत्तर दायर किया है जो भारत में किए गए कुल निर्यात का मात्र 9 प्रतिशत है। यह उत्तर पूर्ण नहीं है और इसलिए प्राधिकारी ने अलग-अलग पाटन मार्जिन के लिए मै. झेजियांग मेडिसिन एंड हेल्थ प्रोडक्ट्स इंपोर्ट एंड एक्सपोर्ट कंपनी लि. पर विचार नहीं करने का निर्णय लिया है।
- iv. ओ-एसिड के क्षति संबंधी आकलन को अलग-अलग करने के संबंध में, प्राधिकारी यह स्पष्ट करते हैं कि इस निदेशालय में दो अलग-अलग जांच चल रही हैं। एक जांच ओ-एसिड की और दूसरी जांच ऑफ्लोसेक्सिन की है। प्राधिकारी द्वारा प्रत्येक मामले के तथ्यों के आधार पर अलग-अलग ढंग से क्षति विश्लेषण किया गया है।
- v. सामान्य मूल्य की संरचना के संबंध में, प्राधिकारी पुनः दोहराते हैं कि वर्तमान जांच के प्रयोजन से अनुबंध-4 के पैरा-7 के संबंध में सामान्य मूल्य को संरचित किया गया है जिसका उल्लेख इस जांच परिणाम के पैरा-5 में भी किया गया है। घरेलू उद्योग द्वारा दी गई सूचना के अनुसार, कच्चे माल की लागत के अनुसार प्रमुख कच्चे मालों की आदर्शतम खपत, लागत के उत्पादन पर उचित लाभ के साथ-साथ घरेलू उद्योग के लिए जिन स्तरों पर परिवर्तन लागत, ब्याज, एसजीए व्यय आदि की अनुमति दी गई है, पर विचार करते हुए इसे संरचित किया गया है। कच्चे माल की लागत एफओबी कीमत तय करने के लिए सीमाशुल्क, उपकर, अवतरण प्रभार, समुद्री भाड़ा और समुद्री बीमा के लिए पहुंच मूल्य का विधिवत समायोजन करने के बाद चीन से आयात किए गए ओ-एसिड के आधार पर किया गया है और तब कच्चे माल की इस एफओबी कीमत का उपयोग सीएनवी तय करने के लिए किया गया था।
- vi. दि चाइना चैम्बर ऑफ कॉमर्स और इंपोर्ट एंड एक्सपोर्ट ऑफ मेडिसिन एंड हेल्थ प्रोडक्ट्स (सीसीसीएमएचपीआईई) द्वारा किए गए अनुरोधों पर विधिवत विचार किया गया था और प्रकटन विवरण तथा वर्तमान जांच परिणाम में इसका समाधान किया गया था।
- vii. चीन चैम्बर ऑफ कॉमर्स फॉर ऑयल एंड एक्सपोर्ट ऑफ मेडिसिन एंड हेल्थ प्रोडक्ट्स (सीसीसीएमएचपीआईई) की प्रस्तुतियां, जांच

की गई और उचित रूप से विचार-विमर्श किया गया और उचित रूप से प्रकटीकरण वक्तव्य में तथा साथ ही वर्तमान खोजों में भी संबोधित किया गया।

ट. निष्कर्ष

81. हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए अनुरोधों और उठाए गए मुद्दों तथा इस जांच परिणाम में दर्ज किए गए अनुसार प्राधिकारी के समक्ष उपलब्ध कराए गए तथ्यों की जांच करने के बाद प्राधिकारी का यह निष्कर्ष है कि :

- विचाराधीन उत्पाद का निर्यात भारत में संबद्ध देश से इसके सामान्य मूल्य से कम मूल्य पर किया गया है जिसके फलस्वरूप पाटन हुआ है।
- घरेलू उद्योग को संबद्ध देश से विचाराधीन उत्पाद के पाटन के कारण वास्तविक क्षति हुई है।
- वास्तविक क्षति संबद्ध देश से पाटित आयातों के कारण हुई है।
- तथ्य यह है कि अन्य भारतीय उत्पादक एक अच्छी गति से बढ़ रहे हैं, यह जांच के संदर्भ में भी प्रासंगिक है। हालांकि, मेसर्स दानोफार्म केमिकल्स प्राइवेट लिमिटेड को छोड़कर लिमिटेड, कोई अन्य निर्माता या तो समर्थन या याचिका का विरोध नहीं किया है इसके अलावा तथ्य यह है कि मौजूदा जांच में घरेलू उद्योग के आदेश पर प्रमुख कच्चा माल (ओ-एसिड) में से एक पर 3 वर्षों के लिए एंटी डंपिंग शुल्क की सिफारिश की गई है, इस जांच के परिणाम के लिए भी प्रासंगिक है।

ठ भारतीय उद्योग के हित एवं अन्य मुद्दे :

82. प्राधिकारी नोट करते हैं कि सामान्य तौर पर पाटनरोधी शुल्कों का उद्देश्य पाटन की अनुचित व्यापार प्रथाओं से घरेलू उद्योग को होने वाली क्षति को दूर करना है ताकि भारतीय बाजार में खुली एवं उचित प्रतिस्पर्धा की स्थिति फिर से स्थापित हो सके जो देश के सामान्य हित में है। यह माना गया है कि पाटनरोधी शुल्कों को लगाने से डाउन स्ट्रीम उत्पादों की कीमत के स्तरों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है और इसके परिणामस्वरूप इसका इन उत्पादों की सापेक्ष प्रतिस्पर्धात्मकता पर कुछ प्रभाव पड़ सकता है। हालांकि, भारतीय बाजार में उचित प्रतिस्पर्धा में पाटनरोधी उपायों से विशेषकर यदि पाटनरोधी शुल्क उस आवश्यक राशि तक सीमित हो जो घरेलू उद्योग को क्षति से बचाने के लिए आवश्यक हो, कमी नहीं आएगी। इसके विपरीत, पाटनरोधी उपायों को लगाने से पाटन प्रथाओं द्वारा प्राप्त अनुचित लाभ समाप्त हो जाएंगे, घरेलू उद्योग की गिरावट को रोका जा सकेगा और संबद्ध वस्तुओं के उपभोक्ताओं को अपेक्षाकृत व्यापक विकल्प की उपलब्धता बनाए रखने में सहायता मिलेगी। पाटनरोधी उपायों को लगाने से किसी भी प्रकार से संबद्ध देश से आयातों पर प्रतिबंध नहीं लगेगा और इस कारण से उपभोक्ताओं को इस उत्पाद की उपलब्धता पर प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ेगा।

ड. सिफारिशें

83. प्राधिकारी नोट करते हैं कि इस जांच को आरंभ किया गया था और इसे सभी हितबद्ध पक्षकारों को अधिसूचित किया गया था और निर्यातकों, आयातकों और अन्य हितबद्ध पक्षकारों को पाटन, क्षति और कारणात्मक संबंध के पहलुओं पर सकारात्मक सूचना देने के लिए समुचित अवसर दिए गए थे। पाटन, क्षति और पाटनरोधी नियमावली के संबंध में उसके कारणात्मक संबंध की जांच शुरू करने और आयोजित करने के बाद तथा इस प्रकार के पाटित आयातों से घरेलू उद्योग को होने वाले सकारात्मक पाटन मार्जिन तथा वास्तविक क्षति को स्थापित करने के बाद प्राधिकारी का यह मत है कि पाटनरोधी शुल्क को लगाया जाना पाटन और क्षति को दूर करने के लिए अपेक्षित है। इस कारण से प्राधिकारी इसे आवश्यक समझते हैं कि वे नीचे दिए गए निर्धारित रूप में और तरीके से संबद्ध देश से संबद्ध वस्तुओं के आयातों पर निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क लगाने की सिफारिश करें केवल 3 वर्षों की अवधि के लिए।

84. इस प्राधिकारी द्वारा अपनाए जाने वाले कमतर शुल्क नियम के संबंध में, प्राधिकारी केन्द्र सरकार द्वारा इस संबंध में जारी की जाने वाली अधिसूचना की तिथि से से पाटन के मार्जिन और क्षति के मार्जिन में से कमतर के समतुल्य निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क लगाने की सिफारिश करते हैं ताकि घरेलू उद्योग को क्षति से बचाया जा सके। तदनुसार, नीचे दी गई तालिका के कॉलम सं. 8 में दर्शायी गई राशि के समतुल्य पाटनरोधी शुल्क संबद्ध देश के मूल के अथवा वहां से निर्यातित संबद्ध वस्तुओं के सभी आयातों पर लगाए जाने की सिफारिश की जाती है केवल 3 वर्षों की अवधि के लिए।

शुल्क तालिका

क्र.सं.	टैरिफ मद*	वस्तुओं का विवरण	मूल देश	निर्यातक देश	उत्पादक	निर्यातक	राशि	यूओएम	मुद्रा
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)	(7)	(8)	(9)	
1	30042034	ओफ्लोक्सिन	चीन जन.गण.	चीन जन.गण.	झेजियांग ईस्ट- एशिया फार्मास्युटीकल	झेजियांग ईस्ट-एशिया फार्मास्युटीकल	6.86	किग्रा.	अम.डॉ.

					कं. लि.	कं. लि.			
2	30042034	ओफ्लोक्सिन	चीन जन.गण.	चीन जन.गण.	झेजियांग अपेलोकेंगीयु फार्मास्युटीकल कं. लि.	झेजियांग अपेलोकेंगीयु फार्मास्युटीकल कं. लि.	2.58	किग्रा.	अम.डॉ.
3	30042034	ओफ्लोक्सिन	चीन जन.गण.	चीन जन.गण.	क्र. सं. 1 और 2 को छोड़कर कोई अन्य युग्म	क्र. सं. 1 और 2 को छोड़कर कोई अन्य युग्म	9.48	किग्रा.	अम.डॉ.
4	30042034	ओफ्लोक्सिन	चीन जन.गण.	कोई भी	कोई भी	कोई भी	9.48	किग्रा.	अम.डॉ.
5	30042034	ओफ्लोक्सिन	कोई भी	चीन जन.गण.	कोई भी	कोई भी	9.48	किग्रा.	अम.डॉ.

* सीमा शुल्क वर्गीकरण केवल सांकेतिक है और शुल्क का निर्धारण विचाराधीन उत्पाद के विवरण के अनुसार किया जाएगा।

85. इस अधिसूचना के उद्देश्य से आयातों का पहुंच मूल्य सीमा शुल्क अधिनियम, 1962 (1962 का 52) के अंतर्गत सीमा शुल्क द्वारा यथा निर्धारित आकलन योग्य मूल्य होगा और इसमें उक्त अधिनियम की धारा 3, 3क, 8 ख, 9 और 9क के अंतर्गत शुल्कों को छोड़कर सभी सीमाशुल्क शामिल हैं।

86. इस जांच परिणाम से उत्पन्न होने वाले केन्द्र सरकार के आदेश के विरुद्ध कोई अपील सीमा शुल्क अधिनियम के अनुसार सीमा शुल्क, उत्पाद शुल्क और सेवा कर अपीलीय प्राधिकरण के समक्ष दायर की जाएगी।

सुनील कुमार, अपर सचिव एवं निर्दिष्ट प्राधिकारी

MINISTRY OF COMMERCE AND INDUSTRY

(Department of Commerce)

(DIRECTORATE GENERAL OF ANTI DUMPING AND ALLIED DUTIES)

NOTIFICATION

New Delhi, the 22nd December, 2017

Subject: Anti-dumping duty investigation on the imports of Ofloxacin originating in or exported from China PR.

A. BACKGROUND OF THE CASE

F. No. 14/06/2016-DGAD.— (1) M/s. Aarti Drugs Ltd. (hereinafter referred to as ‘petitioner’) had filed an application (also referred to as petition) before the Designated Authority (hereinafter referred to as the Authority) in accordance with the Customs Tariff Act, 1975 as amended from time to time (hereinafter referred to as the Act) and Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti-Dumping Duty on Dumped articles and for Determination of injury) Rules, 1995 as amended from time to time (hereinafter referred to as the AD Rules) for initiation of anti-dumping investigation concerning imports of “Ofloxacin” (hereinafter referred to as subject goods or product under consideration) originating in or exported from China PR (hereinafter referred to as the subject country).

- Whereas, the Authority found that sufficient prima facie evidence of dumping of the subject goods originating in or exported from the subject country, ‘injury’ to the domestic industry and causal link between the dumping and ‘injury’ exists justifying initiation of an anti-dumping investigation and Authority initiated an investigation into the alleged dumping, and consequent injury to the domestic industry in terms of Rule 5 of the AD Rules, to determine the existence, degree and effect of the alleged dumping and, if so, to recommend the amount of anti-dumping duty, which if levied would be adequate to remove the ‘injury’ to the domestic industry.

B. GENERAL PROCEDURE

3. Procedure described below has been followed with regard to this investigation.
 - i. The Authority notified the Embassy of China in India about the receipt of the anti-dumping application before proceeding to initiate the investigations in accordance with sub-rule (5) of Rule 5 supra.
 - ii. And whereas, the Authority on the basis of sufficient evidence submitted by the applicant to justify initiation of Anti-dumping duty investigation issued an Initiation Notification No. 14/06/2016-DGAD dated 4th October, 2016.
 - iii. The Authority sent a copy of the initiation notification to the embassy of the subject country in India, known producers/exporters from the subject country, known importers/users in India, other Indian producers and the domestic industry as per the addresses made available by the applicants and requested them to make their views known in writing within 40 days of the initiation notification.
 - iv. The Authority provided a copy of the non-confidential version of the application to the known producers/exporters and to the Embassy of China in India in accordance with Rule 6(3) of the Rules supra.
 - v. The Embassy of China was also requested to advise the Chinese exporters/producers to respond to the questionnaire within the prescribed time limit. A copy of the letter and questionnaire sent to the producers/exporters was also sent to them along with the names and addresses of the known producers/exporters from China.
 - vi. The Authority sent Exporter's Questionnaire and Market Economy Questionnaire to elicit relevant information to the following known producers/exporters in accordance with Rule 6(4) of the Rules:
 - a. Zhejiang Jingxin Pharmaceutical Co., Ltd.
 - b. Zhejiang Apeloa Kangyu Pharmaceutical Co., Ltd.
 - c. Zhejiang East-Asia Pharmaceutical Co., Ltd.
 - d. Zhejiang Yongning Pharmaceutical Co., Ltd.
 - e. Jiangsu Guotai Int'l Group Huatai Imp. & Exp. Co. Ltd.
 - f. Zhejiang Medicines & Health Products Import & Export Co. Ltd.
 - g. Zhejiang Chemicals Import & Export Corporation.
 - h. China Sinopharm International Corporation
 - vii. In response to the above, the following exporters/producers have responded or submitted questionnaire responses:-
 - a. Zhejiang East-Asia Pharmaceutical Co. Ltd.
 - b. Zhejiang Medicines & Health Products Import & Export Co. Ltd.
 - c. Zhejiang Apeloa Kangyu Pharmaceutical Co., Ltd.
 - viii. None of the responding exporters have claimed market economy treatment. The China Chamber of Commerce for Import & Export of Medicines & Health Products Association have filed submissions. Submissions/ Responses made by all the parties have been taken into account in the present determination.
 - ix. The Authority sent Importer's Questionnaires to the following known importers/users of subject goods in India calling for necessary information in accordance with Rule 6(4) of the Rules:
 - a. Cipla Limited
 - b. Macleods Pharmaceuticals Ltd.
 - c. J.B.Chemicals & Pharmaceutical Ltd.
 - d. Aristo Pharmaceutical Pvt Ltd.
 - e. Sun Pharmaceutical Ind. Limited.
 - f. Medl Pharma Drug House.
 - g. FDC Ltd.
 - h. Medley Phannaceuticals Ltd.
 - i. Merck {India} Ltd.
 - j. Cadila Healthcare Ltd.
 - k. Alkem Laboratories Ltd.
 - x. None of the importers have filed submissions or response to the Importer's questionnaire.

- xi. The Authority made available non-confidential version of the evidence presented by various interested parties in the form of a public file kept open for inspection by the interested parties.
- xii. The Authority sought information from Directorate General of Commercial Intelligence and Statistics (DGCI&S) for transaction-wise details of imports of subject goods for the past three years, and the period of investigations. The Authority has, relied upon the DGCI&S data for computation of the volume of imports and required analysis after due examination of the transactions.
- xiii. The Non-injurious Price (NIP) based on the optimum cost of production and cost to make & sell the subject goods in India based on the information furnished by the domestic industry on the basis of Generally Accepted Accounting Principles (GAAP) and Annexure III to the Anti-dumping Rules has been worked out so as to ascertain whether Anti-Dumping duty lower than the dumping margin would be sufficient to remove injury to the Domestic Industry.
- xiv. The Authority held an oral hearing on 31st July 2017 to provide an opportunity to the interested parties to present relevant information orally in accordance with Rule 6 (6), which was attended by the representatives of domestic industry and the opposing interested parties. The representatives of domestic industry and the interested parties who presented their views orally at the time of oral hearing were advised to file written submissions of the views expressed orally.
- xv. The last date for issue of Final finding was 3rd October, 2017, however the same was extended for three months by Central Government in terms of Rule 17(1)(a) upto 3rd January, 2018.
- xvi. Due to change of the Designated Authority and in line with the judgment of the Hon'ble Supreme Court in the ATMA case, another oral hearing was conducted by the new Designated Authority on 25th October, 2017. The parties, who presented their views in the 2nd oral hearing, were requested to file written submissions of the views expressed orally, followed by rejoinder submissions.
- xvii. On the spot verification of the data of the domestic industry was carried out to the extent considered necessary. Only such verified information with necessary rectification, wherever applicable, has been relied upon for the purpose of this investigation.
- xviii. The Period of Investigation (POI) for the purpose of the present investigation is July, 2015- June, 2016 (12 months). The examination in the context of injury analysis covers the periods 2013-2014, 2014-2015, 2015-2016, and the POI.
- xix. The submissions made by the interested parties during the course of this investigation, wherever found relevant, have been duly addressed by the Authority.
- xx. Information provided by the interested parties on confidential basis was examined with regard to sufficiency of the confidentiality claim. On being satisfied, the Authority has accepted the confidentiality claims wherever warranted and such information has been considered as confidential and not disclosed to other interested parties. Wherever possible, parties providing information on confidential basis were directed to provide sufficient non confidential version of the information filed on confidential basis.
- xxi. Wherever an interested party has refused access to, or has otherwise not provided necessary information during the course of the present investigation, or has significantly impeded the investigation, the Authority has considered such parties as non-cooperative and recorded the findings on the basis of the facts available.
- xxii. A Disclosure Statement was issued on 1.12.2017 containing essential facts under consideration of the Designated Authority, giving time up to 08.12.2017 to furnish comments, if any, on Disclosure Statement. The Authority has considered post disclosure comments received from interested parties appropriately.
- xxiii. '****' in this Final Finding represent information furnished by an interested party on confidential basis and so considered by the Authority under the Rules.
- xxiv. The exchange rate for the POI has been taken by the Authority as Rs.66.84 = 1 US\$.

C. PRODUCT UNDER CONSIDERATION AND LIKE ARTICLE

Views of the Domestic industry

4. The views of the domestic industry are as follows:

- i. The product involved in the present investigation is Ofloxacin in all its form. Ofloxacin is a synthetic chemotherapeutic antibiotic of the fluoroquinolone drug class considered to be a second-generation fluoroquinolone. Ofloxacin is a racemic mixture, which consists of 50% Ofloxacin (the biologically active component) and 50% of its "mirror image" or enantiomer dextrOfloxacin.

- ii. Ofloxacin is used to treat certain infections including bronchitis, pneumonia, and infections of the skin, bladder, urinary tract, reproductive organs, and prostate (a male reproductive gland). Ofloxacin is in a class of anti-biotics called fluoroquinolones. It works by killing bacteria that cause infections.
- iii. The subject good being a pharmaceutical product falls under Chapter 30 of the Act under sub-heading 30042034. However, the customs classification is indicative only and is in no way binding on the scope of the present investigation.
- iv. There is no difference in Ofloxacin produced by the Indian industry and the product exported from the subject country. Ofloxacin produced by the Indian industry and imported from the subject country is comparable in essential product characteristics such as physical & chemical characteristics, manufacturing process & technology, functions & uses, product specifications, pricing, distribution & marketing and tariff classification of the goods. Consumers can use and are using the two interchangeably. The two are technically and commercially substitutable. Ofloxacin produced by the domestic industry should be treated as like article to the Ofloxacin imported from the subject country in accordance with the Anti-dumping Rules.

Views of the opposing interested parties

5. None of the importers, consumers, exporters and any other interested party has filed any comment or submissions with regard to product under consideration, and like articles.

Examination by the Authority

6. The product under consideration is “Ofloxacin”, a synthetic chemotherapeutic antibiotic with the chemical formula $C_{18}H_{20}FN_3O_4$. Ofloxacin is an off-white yellow crystalline powder. The normal commercial unit of measurement for the product under consideration is kilograms. It is quoted on the basis of weights, and sold in kilograms or MT universally.
7. Subject goods are classified under Chapter 30 of Customs Tariff Act, 1975 under the subheading 30042034. The customs classification is indicative only and is in no way binding on the scope of the investigations.
8. After considering the information on record, the Authority notes that there is no known difference in the subject goods produced by the domestic industry and that imported from the subject countries. The subject goods produced by the domestic industry and the subject goods imported from the subject country are comparable in terms of characteristics such as physical and chemical characteristics, manufacturing process and technology, functions and uses, product specifications, distribution and market & tariff classification of the goods and are like articles. The consumers are using the two interchangeably. Thus, for the purpose of present investigation the subject goods produced by the applicant in India are being treated as like article to the subject goods being imported from subject country.

D. SCOPE OF DOMESTIC INDUSTRY & STANDING

Views of the Domestic industry

9. Following submissions have been made by the domestic industry with regard to scope and standing of the domestic industry:
 - i. The petition was filed by M/s. Aarti Drugs Ltd. Other producers of subject goods are Anuja Healthcare Ltd; Infinity Laboratories Ltd; Danopharm; Sun Pharmaceuticals Ind. Ltd.; Alkem Laboratories Ltd. and Godavari Drugs Ltd.
 - ii. Production of petitioner constitutes a major proportion in Indian Production and therefore, the petitioner should be treated as “domestic industry” within the meaning of the Rules.
 - iii. The petitioner has not imported the subject goods during the period of investigation, and further, is not related to any exporter or producer of the subject goods in China or any importer or user of the product under consideration in India within the meaning of Rule 2(b).

Views of the opposing interested parties

10. The opposing interested parties have stated that there is no documentary evidence to confirm the production figures claimed by Domestic Industry. Unless the total production figures of subject goods are conclusively determined; none of the domestic producer(s) will qualify as Domestic Industry.

Examination of the Authority

11. The Authority has estimated the production of Ofloxacin in India on the basis of O-Acid. The production of PUC requires O-Acid as the key raw material. The Authority has conducted and concluded a separate investigation into dumping of O-Acid wherein the petitioner had claimed that the petitioner is the sole (new) producer of O-Acid. There were/are no other producers of O-Acid in India. The claim of the petitioner with regard to production of O-Acid has remained unrefuted. Thus, production of Ofloxacin is either from imported O-Acid or from O-Acid

produced by petitioner. Production figures of petitioner with regard to O-Acid and import of O-Acid into India has also been verified by the Authority. The Authority has considered that production of 1MT Ofloxacin requires consumption of ***MT O-Acid. This consumption figure has also been verified by the Authority. Thus, on the basis of consumption figures relating to O-Acid, as determined from imports of O-Acid in India, the Authority has quantified production of Ofloxacin in India. It is found that production of Ofloxacin in India during POI was ***MT.

12. The petitioner M/s. Aarti Drugs Limited, is a producer of subject goods with a production of ***MT which is 58% of Indian production. They have not imported the subject goods nor are related to importers or exporters of subject goods in China PR. The Authority has verified the information submitted by the petitioner and concludes that the petitioner constitutes eligible domestic industry for the present purposes.
13. Other known producers have not participated in the present investigation. A reference was specifically made to known Indian producers seeking information, however only Danopharm Chemicals Pvt. Ltd. had responded giving information about their production and supporting the petition. Nor any other interested party has provided any documentary evidence to dispute the claim of the petitioner. There is no opposition to the application. The Authority therefore concludes that production of petitioner constitutes a major proportion in Indian production. The petitioner therefore satisfies requirements of standing under the law.

E. MISCELLANEOUS ISSUES RAISED BY THE INTERESTED PARTIES

Views of the Domestic Industry

14. The domestic industry, in its submissions, has refuted the arguments of the interested parties and the submissions have been summarized as follows:
 - i. Excessive confidentiality has not been claimed by the petitioner. The petitioner has provided sufficient reasoning to claim costing information as confidential. Further, confidentiality has been claimed on information not publically available.
 - ii. The exporters have claimed most of the information as confidential and no proper summarization has been provided by them. The interested parties have not disclosed all such information that they are obliged to disclose under the Rules and practice being followed by the Designated Authority in this regard;
 - iii. The petitioner has transferred captively produced raw material in accordance with statutory regulations of the country.
 - iv. The petitioner had earlier filed combined petition for both Ofloxacin and O Acid. However, the Authority found it appropriate to consider the two as separate products and directed filing of separate applications. In any case, there is no bar in imposition of ADD on intermediary product and final product as injury is being established separately for the two.
 - v. The imports are not allowing growth of the domestic industry in the Country to produce and sell the product under consideration to the extent of capacities and demand in the market. The inconsistency in production is on account of presence of significantly dumped goods in the market.
 - vi. The price undertaking needs to be out rightly rejected on account of delay in making such offers and conduct of the party. The exporters have not submitted the information relating to normal value and cost of production which are critically required for effective monitoring of price undertaking. Moreover, any price undertaking in a product like the present will have to be linked to raw material prices, which is not provided, thus there are practical difficulties in accepting the undertaking. There are no published prices of major raw material, therefore, it is not possible to monitor the price variation in raw material and corresponding export prices. The exporter has not offered to link the prices to changes in the major raw materials. The concerned exporter has not co-operated in O-Acid investigation, which is attracting ADD, in such case the exporter can manipulate the price of O-Acid and get undue advantage in respect of Ofloxacin.. Hence, the Authority is requested to not accept the price undertaking offered by the exporter as per Rule 15 of AD Rules which confers discretion on the Authority to accept or not accept the price undertaking offered by the exporter.

Submissions of the opposing interested parties

15. The interested parties have raised several issues with respect to the present investigation, including methodologies of dumping determination adopted by the domestic industry in its petition and their injury claims, which are as below:
 - i. Excessive confidentiality has been claimed by the domestic industry and most of the vital data pertaining to the claims of dumping and injury have been kept confidential thereby denying the interested parties to meaningfully understand and comment upon them.
 - ii. The applicant has used captively produced raw material namely O-Acid and transferred it at a cost higher than the actual cost, which results in increase in the total cost of the subject goods. It was transferred at cost plus 10%.

- iii. The cost of O-Acid accounts for almost 85 per cent of the total cost of Ofloxacin. There is minimal value addition required for production of Ofloxacin. Authority shouldn't allow for imposition of anti-dumping duty on intermediary product O-Acid as well as final product- Ofloxacin.
- iv. The exporter M/s. Zhejiang East Asia Pharmaceutical Co. Ltd. has submitted price undertaking in terms of Rule 15 of the rules 1995 stating that they agree not to sell the subject goods to India at prices lower than USD as per final calculation of Designated Authority. They have further stated that company shall review the change of average import price of ended quarter under the subheading 30042034 compared to the average imports of the quarter prior to the ended quarter, if the price change is over 10%, the company could apply for the undertaking price shall be adjusted with the same price change ratio and if price change is not over 10%, the undertaking price shall remain the same. They further stated that the application of revised undertaking price and the calculation shall be telefaxed immediately to DGAD accompanied by a covering letter referring to this undertaking and the original documents will be forwarded to DGAD by express delivery.

Examination of the Authority

16. Various miscellaneous issues raised by the interested parties have been examined. As far as the issues raised by the interested parties and the domestic industry regarding the confidentiality claims are concerned, the Authority notes that to the extent possible and practicable the confidentiality claims of various parties submitting the information have been examined and confidentiality claims admitted on the basis of nature of information provided by the parties.

- i. The transfer pricing adopted by Domestic Industry was verified by the Authority. However, the Authority has adopted the transfer price of O Acid based on normatted cost of production of O acid (without any profit margin).
- ii. The injury suffered in O-Acid and Ofloxacin have been separately examined, as the Authority has considered these two product as distinctly different articles.
- iii. As regards imposition of ADD on intermediates and finished product, the Authority notes that there is no bar under the anti-dumping Rules which prevents simultaneous investigation and levy of duty on intermediaries and finished products.

iv. **PRICE UNDERTAKING:** Rule 15 relating to Suspension or termination of investigation on price undertaking provides that

(1) *The Designated Authority may suspend or terminate an investigation if the exporter of the article in question:*

- (i) *furnishes an undertaking in writing to the Designated Authority to revise the prices so that no exports of the said article are made to India at dumped prices, or*
- (ii) *in the case of imports from specified countries undertake to revise the prices so that injurious effect of dumping is eliminated and the Designated Authority is satisfied that the injurious effect of the dumping is eliminated:*

Provided further that the designated authority shall complete the investigation and record its finding, if the exporter so desires, or it so decides.

- (2) *No undertaking as regards price increase under clause (ii) of the sub-rule (1) shall be accepted from any exporter unless the designated authority had made preliminary determination of dumping and the injury.*
- (3) *The designated authority may, also not accept undertakings offered by any exporter, if it considers that acceptance of such undertaking is impractical or is unacceptable for any other reason.*
- (4) *The designated authority shall intimate the acceptance of an undertaking and suspension or termination of investigation to the Central Government and also issue a public notice in this regard. The public notice shall, contain inter alia, the non-confidential part of the undertaking.*
- (5) *In cases where an undertaking has been accepted by the designated authority the Central Government may not impose a duty under sub-section (2) of section 9A of the Act for such period the undertaking acceptable to the designated authority remains valid.*
- (6) *Where the designated authority has accepted any undertaking under sub-rule (1), it may require the exporter from whom such undertaking has been accepted to provide from time to time information relevant to the fulfilment of the undertaking and to permit verification of relevant data :*

Provided that in case of any violation of an undertaking, the designated authority shall, as soon as may be possible, inform the Central Government of the violation of the undertaking and recommend imposition of provisional duty from the date of such violation in accordance with the provisions of these rules.

(7) *The designated authority shall, suo motu or on the basis of any request received from exporters or importers of the article in question or any other interested party, review from time to time the need for the continuance of any undertaking given earlier.*

- v. M/s. Zhejiang East Asia Pharmaceutical Co. Ltd, producer and exporter of subject goods from the subject country had shown willingness to give price undertaking. The price undertaking proposal given by the exporter was considered by the Authority. The domestic industry has strongly opposed the acceptance of price undertaking of the exporter. The Authority noted that the information relating to normal value and cost of production which are critically required for effective monitoring of price undertaking are not available as there are no published prices of major raw material. Also, the exporter has not offered to link the prices to changes in the major raw materials. Therefore it is not possible to monitor the price variation in raw material and corresponding export prices. In view of administrative difficulty in monitoring of price undertaking, the Authority is not inclined to accept the request of the exporter. In any case, the anti-dumping duty against M/s Zhejiang East Asia Pharmaceutical Co. Ltd is on injury margin in terms of lesser duty rules followed by the Directorate and their undertaking of a price which is less than the NIP is insufficient to remedy the injury caused to the Domestic industry. Therefore, the Authority rejects the price undertaking offered by the exporter.

F. NORMAL VALUE, EXPORT PRICE AND DETERMINATION OF DUMPING MARGIN

17. The relevant provisions are given in Section 9A (1) (c) of the Customs Tariff Act, 1975 Annexure I of the Anti-dumping Rules

Views of the Domestic industry

18. The domestic industry inter alia submitted as follows:

- i. Petitioner has constructed normal value based on best available information. The interested parties have not provided any evidence to show availability of public information. It is also relevant to point that if any such information is publicly available, the interested parties are free to establish that the import price is not a dumped price.
- ii. Since the factum of dumping causing injury to the domestic industry is established based on investigation period, the conditions prevalent during the investigation period alone should be considered relevant, appropriate and necessary for the purpose.
- iii. The Chinese producers are required to be treated as non-market economy companies for the reason that the costs and prices in China do not reasonably reflect the market forces. Para 8 to Annexure-I specifies the parameters which should be considered for grant of market economy status. This also implies that unless these conditions are not fulfilled/ satisfied, the Chinese costs and prices cannot be adopted.
- iv. The consideration of market economy status is based on parameters prevailing during investigation period. Since the reason for rejection of Chinese costs and prices is distortion in the costs and prices in China due to the factors listed in Para 8 to Annexure-I, it is the investigation period that is relevant to decide consideration of Chinese producers as market economy companies.
- v. Since Chinese companies have been denied market economy status for the reasons mentioned in Para 8 of Annexure-I till December, 2016, the Chinese producers are required to be treated as non-market economy companies till such time the investigation period includes the period specified in Accession Treaty protocol.
- vi. In the context of rule 2(b), it is well established legal position that the imports by a domestic producer or its relationship with an exporter or importer are examined with reference to the investigation period. If POI alone is relevant for standing purposes, POI alone should be relevant for normal value determination.
- vii. Chinese producers are required to be treated as companies operating under non-market economy environment and the Authority may proceed to determine the normal value on the basis of Para 7 of Annexure-I.
- viii. Normal value could not be determined on the basis of price or constructed value in a market economy third country for the reason that the relevant information is not publicly available. The petitioner has claimed consideration of normal value on the basis of cost of production in India duly adjusted.
- ix. The dumping margin from China is not only significant, but also substantial, thus establishing existence of significant dumping of the product under consideration in India. The import volume of China has remained significant throughout the present injury period.

Views of the opposing interested parties

19. The following submissions of the importers, consumers, exporters and other interested parties have been filed with regard to normal value.

- i. The CNV is not in conformity with law as -
 - a. Applicant has constructed the normal value based on price actually paid or payable in India for the like product, which is not appropriate.
 - b. Applicant being the importer of raw material, the Authority must compute Normal Value on basis of cost of imported O-Acid and not on the basis of normative cost of O-Acid produced by Applicant.

Examination by the Authority

20. The Authority had sent copies of exporter's questionnaire and questionnaire on market economy treatment (MET) to exporters in China PR. However, no producer/exporter has claimed MET. In view of the above, the Authority considers it appropriate to proceed with para-7 of Annexure I to the Rules for determination of normal value in case of China PR.
21. As regards the claim of opposing interested parties that normal value in China may be determined by considering the import price of like article from the market economy third country to India, it is noted that no information has been provided in this regard by any party. Therefore, the Authority has proceeded in accordance with the Rules.
22. In view of the above, the Authority has constructed normal value having regard to para-7 of Annexure-I for the purpose of present investigation. The normal value for the subject goods imported from China into India has been constructed considering optimum consumption of major raw materials as per information provided by the domestic industry, conversion cost, interest, SGA expenses, etc. at the levels allowed for the domestic industry along with a reasonable profit on the cost of production. The cost of raw material been taken based on O-Acid imported from China after the landed value has been duly adjusted for customs duty, cess, landing charges, ocean freight and ocean insurance to arrive at FOB price and then this FOB price of raw material was used for working out CNV.

Export price for all exporters in China

23. Following producers/exporters from subject country have filed exporter questionnaire response and have provided information giving details of export price:
 - i. Zhejiang East-Asia Pharmaceutical Co. Ltd.
 - ii. Zhejiang Apelo Kangyu Pharmaceutical Co. Ltd.
 - iii. Zhejiang Medicines & Health Products Import & Export Co. Ltd.
24. The responses have been appropriately examined and verified to the extent possible for determination of dumping margin.
25. From the responses filed by M/s. Zhejiang East-Asia Pharmaceutical Co. Ltd. and Zhejiang Apelo Kangyu Pharmaceutical Co. Ltd, the Authority notes that they are producer as well as exporter of the subject goods. During the POI, Zhejiang East-Asia and Zhejiang Apelo Kangyu has exported the subject goods directly. Adjustment towards inland freight, ocean freight, handling and customs charges, insurance, credit cost, and bank charges have been claimed by the producer and exporters and the same have been allowed by the Authority. Accordingly, the export price has been determined at ex-factory level is shown in the Dumping Margin Table below.
26. Zhejiang Medicines & Health Products Import & Export Co. Ltd. have submitted exporter questionnaire response. On examination it is found that they are only the exporters and not the producers of the subject goods. They are exporting to India as well as other countries. As per appendix 2 details they have exported five consignments to India. The same were procured from various unrelated producers in China and then exported to India. Only one of the producers involved namely Zhejiang East-Asia Pharmaceutical Co. Ltd. has filed response, however, other producers have not filed responses. In view of the absence of producers' response for the said exports, the Authority has decided to not consider M/s Zhejiang Medicines & Health Products Import & Export Co. Ltd. for individual dumping margin.

Dumping Margin

27. Considering the normal value and export price above, the dumping margin for all exporters of the subject goods from the subject country is determined as below:

DUMPING MARGIN TABLE

S.No	Producer/Exporter	CNV	NEP	Dumping Margin		
		USD/Kg	USD/Kg	USD/Kg	(%)	Range
1	Zhejiang East-Asia Pharmaceutical Co. Ltd	***	***	***	***	20-30
2	Zhejiang Apelo Kangyu	***	***	***	***	1-10

	Pharmaceutical Co.Ltd					
3	Any other	***	***	***	***	25-35

G. INJURY AND CAUSAL LINK

28. The Authority notes that the application for imposition of antidumping duty has been filed by M/s. Aarti drugs Ltd. In terms of Rule 2(b) of the Rules the petitioner has been treated as the domestic industry for the purpose of this investigation. Therefore, for the purpose of this determination the cost and injury information of the petitioner, constituting the domestic industry as defined in Rule 2(b), has been examined.

Views of Domestic Industry

29. The domestic industry has submitted as follows with regard to injury and causal link:
- The imports have been significant over the injury period in absolute terms as well as in relation to total imports, production and consumption, The dumped imports from the subject country have entered the Indian ports in significant volumes in the recent period.
 - Decline in imports is due to production of O-Acid in the country, which led to more domestic production of the product under consideration, the volume of imports in fact would have been much lower, but for dumping of O-Acid and Ofloxacin in the Country, faced with possibility of loosing Indian market with the capacity building in the Country, the exporters became aggressive in a bid to damage the domestic industry and compete inter-se to retain the market share in India, by resorting to price war in the Indian market, as is evident from the steep decline in the prices.
 - There is the steep decline in the import prices of Ofloxacin in the investigation period with the commencement of production of O Acid by the petitioner, thus forcing the domestic industry to import O acid inspite of having sufficient captive capacities and also transfer it at highly un-remunerative prices to the other unit.
 - Price undercutting was positive in 2013-14, 2014-15 and negative in 2015-16 and POI. The negative price undercutting in the POI is for the reason that while the petitioner has no option but to react to price offers given by the Chinese producers and therefore the petitioner's prices reflect the prices offered by the Chinese producers in competition to imports, the actual landed price in that month reflects orders booked in the past.
 - There is significant price depression over the period. The price depression caused by the dumped imports have had significant injurious adverse price effect on the performance of the domestic industry, which requires urgent action by imposition of anti dumping duty in order to curb dumping and consequent injury to the domestic industry.
 - Capacity utilization of the domestic industry has declined over the injury period. Presence of dumped imports is not allowing the domestic industry to fully utilize their capacity and maximize its production and sales despite existence of significant demand and capacities in the Country.
 - Petitioner came up with additional plant with enhanced capacity, and though the production and sales volume have increased, capacity utilization has declined. The increased production and sales merely reflect the additional capacities that have now come up and are at the cost of financial losses.
 - The inventory levels are high in POI as compared to 2014-15 and 2015-16. Domestic industry was able to increase its production with additional plant facility.
 - Market share held by the domestic industry as well as Indian producers as a whole has increased over the injury period. Though the market share of imports from the subject country has declined, it has remained significant over the injury period.
 - Productivity of the domestic industry has increased commensurate with the increase in production.
 - The domestic industry has shown positive growth in terms of production, sales, capacity utilization and market share. However, the growth of the domestic industry in terms of profits, return on investment and cash profits was severely negative due to the presence of dumped imports
 - The growth of the domestic industry became negative with regard to a number of price parameters. Presence of dumped imports in ultimate as well as penultimate stage is causing price injury to the domestic industry.
 - As regards O Acid causing injury, in view of dumping of O acid in the market, the petitioner had to import O Acid from the subject country and not utilize its own production. Thus, to this extent the injury cannot be attributed to dumping of O acid. In any case, assuming that dumping of O Acid has also caused injury to the petitioner, the same does not break the causal link between dumping and injury caused by the imports of Ofloxacin.
 - The domestic industry has very insignificant exports, and export is not the target market for the petitioner. Furthermore, segregated information for the domestic operations has been provided, hence, export performance cannot be a cause of injury to the domestic industry.

Views of the opposing interested parties

30. The exporters have made following submissions and/or comments with regard to injury and causal link-
- i. The landed value of subject goods is well above the Net Sales Realization of the Applicant for the subject goods. The import prices have increased during the period of investigation as compared to the base year by about 10%. So imports can't be causing price injury to the Applicant.
 - ii. There is significant decline in imports of Ofloxacin, both in absolute terms and/or relative to production or consumption in India. Domestic sales of other producers have increased manifold in comparison to the petitioner. This can be attributed to decrease in prices due to domestic competition. Especially considering the fact that imports have declined in the said period.
 - iii. The Applicant has not claimed price underselling on account of alleged dumped imports. Accordingly, there is no documentary evidence on record to substantiate that imports are taking place below NIP of subject goods.
 - iv. The landed value of subject goods is corresponding to cost of sales for subject goods. On the contrary the Applicant failed to maintain their selling price in line with increase in cost of sales, despite landed value of subject goods remained at higher price.
 - v. There is overall improvement in performance of the Applicant. There is growth in production, domestic sales, capacity utilization, profits (before tax) and return on capital employed. Applicant has enhanced the production capacity on consistent basis; therefore, there is no adverse impact on growth of the Applicants.
 - vi. Injury to the Applicant is on account of exports of Ofloxacin by the Applicant. Authority must segregate injury suffered by Applicant on account of such exports.
 - vii. Domestic Industry has imported O-Acid before commencement and even after commencement of production, hence proving that there is no consistent production to meet domestic demand.
 - viii. Injury suffered by Applicant on account of imports of O-Acid in India must be segregated for the purpose of determination of injury margin concerning imports of Ofloxacin. The Applicant is a multi-product company, produces O-Acid and Ofloxacin in common production facilities. Therefore, the segregation of injury on account of different products is all the more important
 - ix. Authority must consider international price or import price of O-Acid for computation of NIP for subject goods.
 - x. Applicant has failed to raise domestic selling price due to inferior quality of domestic product. Indian users of subject goods are not willing to buy the subject goods from indigenous manufacturers on account of sub-standard quality of goods.
 - xi. Calculation of return by adopting 22% uniformly on both the components of capital employed is totally incorrect and needs to be reviewed.

Examination by the Authority

31. The Authority has taken note of submissions made by various interested parties.
- i. The statement of exporters regarding volume of imports is correct to the extent that the quantity of exports during POI is less than the quantity in the base year (2013-14). The sale of Domestic Industry has increased 46% and as that of other Indian producers by 102%.
 - ii. The export of subject goods by the Domestic Industry are only ***MT as against domestic sale of 343 MT during POI. The segregated information for the domestic operations has been examined for determination of injury and hence the minor export performance has not affected the analysis in any way.
 - iii. The domestic industry contention that there was significant decline in the import price of O-Acid and Ofloxacin from China, due to an aggressive market strategy from the Chinese producers with the particular intent to injure the petitioner has been examined in following paras. It is noted that the price of Ofloxacin is even lower than the normatted price of raw materials required for manufacture of Ofloxacin. The Authority is privy to the import prices and domestic prices of O-Acid in view of a recently concluded investigation against import of O-Acid and it is noted that the Ofloxacin has been exported to India by the Chinese exporter at prices which is lower than the prices of O-Acid.
 - iv. The injury suffered on account of O-Acid and Ofloxacin has been analysed separately under two different investigations as has been contended by the opposing interested parties.
32. Transfer pricing of raw materials and NIP: As the domestic industry is also the producer and captive user of the raw material, the issue of transfer pricing while calculating non injurious price has been especially examined by the Authority. The Authority had conducted and concluded a separate investigation into dumping of O-Acid. Information filed by the interested parties in the matter of O-Acid has also been considered wherever relevant and appropriate for the purpose of present investigation. The Authority had determined NIP for the domestic industry in respect of Ofloxacin and O-acid seperately. The transfer price adopted by the Authority is the normatted cost of production of O Acid (without any profit margin) which is below the transfer price claimed by the petitioner. Therefore, the contention of the opposing parties regarding the competition of import price of O-Acid has been addressed.

33. The AD Rules require the Authority to examine injury by examining both volume and price effect. A determination of injury involves an objective examination of both (a) the volume of the dumped imports and the effect of the dumped imports on prices in the domestic market for the like article and (b) the consequent impact of these imports on domestic industry. With regard to the volume of dumped imports, the Authority is required to consider whether there has been a significant increase in the dumped imports, either in absolute terms or relative to production or consumption in India. With regard to the effect of the dumped imports on prices the Authority is required to consider whether there has been a significant price undercutting by the dumped imports as compared with the price of like product in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree or prevent price increases which otherwise would have occurred to a significant degree.
34. As regards the consequent impact of dumped imports on the domestic industry, Para (iv) of Annexure II of Antidumping rules states as under:-
(iv) The examination of the impact of the dumped imports on the domestic industry concerned, shall include an evaluation of all relevant economic factors and indices having a bearing on the state of the industry, including natural and potential decline in sales, profits, output, market share, productivity, return on investments or utilization of capacity; factors affecting domestic prices; the magnitude of the margin of dumping; actual and potential negative effects on cash flow, inventories, employment, wages, growth, ability to raise capital investments.
35. It is not necessary that all parameters of injury show deterioration. Some parameters may show deterioration; while some may show improvement. The Designated Authority considers all injury parameters and thereafter concludes whether the domestic industry has suffered injury due to dumping or not.
36. The Authority has examined the injury to the domestic industry in accordance with the Antidumping Rules and considering the submissions made by the other interested parties. The analysis herein below ipso facto deals with the submissions made by the domestic industry and interested parties.

Assessment of Demand

37. For this purpose, demand or apparent consumption of the product in India is taken as the sum of domestic sales of the Indian producers and imports from all sources. Share of imports from the subject country in demand/consumption in India determined by the Authority is as under-

Particulars	Unit	2013-14	2014-15	2015-16	POI
Imports from Subject Country	MT	346	398	273	320
Imports from Other Country	MT	0	0	0	1
Sales of Domestic Industry	MT	304	383	425	443
Sale of other Indian Producers	MT	170	315	328	343
Total	MT	820	1,096	1,026	1,107

38. The Authority notes that demand has increased over the injury period and imports have declined compared to base year. The sale of other Indian producers has doubled during POI as compared to the base year, whereas, Domestic Industry has shown a growth of 46%.

Volume Effect of Dumped Imports - Import Volumes and Share of Subject Country

39. With regard to the volume of the dumped imports, the Authority is required to consider whether there has been a significant increase in dumped imports, either in absolute terms or relative to production or consumption in India. The Authority has examined the volume of imports of the subject goods from the subject country and other countries based on the transaction-wise import data provided by DGCI&S data. The import volumes of the subject goods and share of the dumped import during the injury investigation period are as follows:

Particulars	Unit	2013-14	2014-15	2015-16	POI
Subject Country	MT	346	398	273	320
Other Country	MT	0	0	-	1
Total	MT	347	398	273	321
Import Price	Rs/Kg	2200	2252	2607	2415

Share of imports in total imports					
Subject Country	%	100%	100%	100%	99.69%
Other Country	%	0%	0%	0%	0.31%
Subject Country Imports in relation to					
Indian Production	%	77%	56%	36%	39%
Consumption	%	42%	36%	27%	29%

40. It is seen that as compared to base year, imports increased in 2014-15, declined thereafter in 2015-16, and once again increased during the POI. Further, the data was examined for post POI to check the trend and it is noted that the import during 2016-17 was 223 MT @ Rs.1775/Kg. Almost entirety of imports are from the subject country. Imports in relation to production and consumption are also significant in the POI.

Price Effect of the Dumped imports on the Domestic Industry

41. With regard to the effect of the dumped imports on prices, Annexure II (ii) of the Rules lays down as follows:
“With regard to the effect of the dumped imports on prices as referred to in sub-rule (2) of rule 18 the Designated Authority shall consider whether there has been a significant price undercutting by the dumped imports as compared with the price of like product in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree or prevent price increase which otherwise would have occurred to a significant degree.”
42. The impact of dumped imports on the prices of the domestic industry has been examined with reference to the price undercutting, price underselling, price suppression and price depression, if any.

a) Price Undercutting

43. In order to determine whether the imports are undercutting the prices of the domestic industry in the market, the Authority has compared landed price of imports with net sales realization of the domestic industry. In this regard, a comparison has been made between the landed value of the product from subject country and selling price of the domestic industry, net of all rebates and taxes, at the same level of trade. The prices of the domestic industry were determined at ex-factory level.

Particulars	Unit	China
Landed Price	Rs/Kg	2,415
Net Selling Price	Rs/Kg	***
Price Undercutting	Rs/Kg	***
Price Undercutting	%	***
Price Undercutting	Range	1-10

44. The Authority notes that the price undercutting is positive. Domestic Industry has stated that they are constrained to match import prices. However, this is not conclusive indication of forced pricing as they could be facing competition from other Indian producers who hold almost equal market as Domestic Industry.

b) Price Underselling

45. The Authority has also examined price underselling suffered by the domestic industry on account of dumped imports from the subject country. For this purpose, the cost of sales determined for the domestic industry has been compared with the landed price of imports. The landed price of imports considered for the purpose of price undercutting has also been adopted for the purpose of determining price underselling. Comparison of weighted average cost of sales of the domestic industry with weighted average landed price of imports are as follows:

Particulars	Unit	China
Non injurious price	Rs/Kg	***
Landed Value	Rs/Kg	2,415
Injury Margin	Rs/Kg	***

Injury Margin	%	***
Injury Margin	Range	10-20

46. It is noted that the landed price of imports were below the non-injurious price of the domestic industry. The Authority notes that the domestic industry has suffered price underselling during the investigation period on account of imports of the subject goods from the subject country.

c) Price Suppression and Depression

47. In order to determine whether the dumped imports are depressing the domestic prices or whether the effect of such imports is to suppress prices to a significant degree and prevent price increases which otherwise would have occurred, the Authority considered the changes in the costs and prices over the injury period. The position is shown as per the Table below.

Particulars	Unit	2013-14	2014-15	2015-16	POI
Cost of Sales	Rs/Kg	***	***	***	***
Trend	Index	100	104	112	120
Selling Price	Rs/Kg	***	***	***	***
Trend	Index	100	106	110	108

48. It is noted that, both, cost of sales increased every year during the injury period and the POI. However, selling price of the domestic industry increased till 2015-16 but declined in the POI. It is also noted that selling price were below the level of cost of sales throughout the injury period, except for 2014-15. Thus, imports were having suppressing and depressing effect on the domestic prices in the domestic market.

Impact on Economic Parameters of the Domestic Industry

49. Annexure II to the Anti-dumping Rules requires that determination of injury shall involve an objective examination of the consequent impact of these imports on domestic producers of like product. The Rules further provide that the examination of the impact of the dumped imports on the domestic industry should include an objective and unbiased evaluation of all relevant economic factors and indices having a bearing on the state of the industry, including actual and potential decline in sales, profits, output, market share, productivity, return on investments or utilization of capacity; factors affecting domestic prices, the magnitude of the margin of dumping; actual and potential negative effects on cash flow, inventories, employment, wages, growth and the ability to raise capital investments. An examination of performance of the domestic industry indicates that the domestic industry has suffered material injury. The various injury parameters relating to the domestic industry are discussed below:

a) Capacity, Production, Capacity Utilization and Sales

50. The performance of the domestic industry with regard to production, domestic sales, capacity & capacity utilization is as follows:

Particulars	Unit	2013-14	2014-15	2015-16	POI
Capacity	MT	400	480	660	720
Trend	Index	100	120	165	180
Production	MT	***	***	***	***
Trend	Index	100	139	153	171
Capacity Utilization	%	***	***	***	***
Trend	Index	100	116	93	95
Sales volume	MT	304	383	425	443
Trend	Indexed	100	126	140	146

51. It is noted that the petitioner has enhanced its capacity over the injury period. Production and sales of the domestic industry has increased as a natural consequence of domestic industry increasing capacity and also starting production of the raw material, i.e., O Acid. However, domestic industry is still not able to utilise its full capacity despite having demand. The other Indian producers have also increased their production and sales which has doubled during POI as compared to the base year. The domestic Industry and other Indian producers together hold 71% of the total Indian demand. Of the various Indian producers, M/s Danopharm Chemical Pvt. Ltd. has submitted the support letter, but others have neither supported nor opposed the petition.

b) Profits, Return on Capital Employed and Cash Profit

52. The cost of sales, selling price, profit/loss, cash profits and return on investment of the domestic industry as per certified C-I is as follows:

Particulars	Unit	2013-14	2014-15	2015-16	POI
Cost of Sales	Rs/Kg	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	104	112	120
Selling Price	Rs/Kg	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	106	110	108
Profit/ (Loss) per unit	Rs/Kg	(***)	***	(***)	(***)
Trend	Indexed	(100)	24	(317)	(1,072)
Profit/ (Loss) – Total	Rs.Lacs	(***)	***	***	***
Trend	Indexed	(100)	31	(451)	(1,584)
Cash Profit	Rs.Lacs	(***)	***	(***)	(***)
Trend	Indexed	(100)	166	(454)	(2,319)
Profit before Interest and Tax	Rs.Lacs	***	***	(***)	(***)
Trend	Indexed	100	233	(31)	(555)
Return on Investment	%	***	***	(***)	(***)
Trend	Range	5-15	5-15	(5)-5	(25)-(15)

53. The Authority notes that the domestic industry earned profits only in 2014-15 and then started incurring significant financial losses from 2015-16 onwards. The losses have further increased in the POI.

54. Profit before interest, cash profits and return on capital employed has also witnessed the same trend. ROI is at significantly negative level in the POI.

c) Market Share in Demand

55. The effects of the dumped imports on the market share in demand of the domestic industry have been examined as below:

Particulars	Unit	2012-13	2013-14	2014-15	POI
Imports from – China	%	42	36	27	29
Imports from Other Country	%	0	0	0	0
Sales of Domestic Industry	%	37	35	41	40
Sale of other Indian Producers	%	21	29	32	31

56. The Authority notes that the market share of the domestic industry and other Indian producers increased during the entire injury period. However, import of subject goods still holds a significant market share despite domestic industry having sufficient capacity to cater to the domestic demand. It is thus seen that dumping of the product may be impacting the market share of the domestic industry. The fact that the other Indian producers have increased their market share is also relevant for assessing the share of Domestic Industry.

d) Employment, Wages and Productivity

57. The position with regard to employment, wages and productivity is as follows:

Particulars	Unit	2013-14	2014-15	2015-16	POI
No. of Employees	Nos.	***	***	***	***
Trend	Index	100	115	117	117
Wages	Rs Lacs	***	***	***	***
Trend	Index	100	152	200	206
Productivity per employee	Kg/No	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	121	131	147
Productivity per day	Kg/Day	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	139	153	171

58. The Authority notes that employment level during POI has increased as compared to base year and so has the level of wages which could be on account of increasing capacity and production. Further, productivity per day and per employee has also increased over the injury period and POI. However, this is not indicative of impact of dumping and consequent injury.

e) Inventory

59. The data relating to inventory of the subject goods are shown in the following table:

Particulars	Unit	2013-14	2014-15	2015-16	POI
Opening Stock	MT	***	***	***	***
Closing Stock	MT	***	***	***	***
Average Stock	MT	15	4	4	19
Trend	Index	100	26	30	129

60. The Authority notes that level of inventories with the domestic industry is not too significant.

f) Magnitude of Dumping

61. It is noted that imports from the subject country are entering Indian market at dumped prices and the margin of dumping is above de-minimus and significant.

g) Ability to raise capital investment

62. Petitioner has enhanced capacities, however they are not able to utilise it to the fullest and are incurring losses. They claim that this will affect their ability to raise capital for further expansion, however, the Authority notes that Domestic Industry are also manufacturing several other drugs, therefore, it is difficult to conclude based on the performance of the subject goods.

h) Growth

63. The data relating to growth of the domestic industry on year to year basis has been examined. The Authority notes that growth in terms of production, and sales volume is positive though on a declining trend. The selling price, PBIT, and ROI are also showing a declining trend and have become negative during POI. The capacity utilisation, which has shown decline, is not indicative of any direct injury because the Domestic Industry has increased its installed capacity consistently during the entire injury period and POI.

i) Factors Affecting Domestic Prices

64. The examination of the import prices from the subject country, change in the cost structure, competition in the domestic market, factors other than dumped imports that might be affecting the prices of the domestic industry in the domestic market has been undertaken. The data shows that the landed value of imported subject goods from the subject country is below the selling price and the non-injurious price of the domestic industry, causing price

undercutting and price underselling in the Indian market. The Authority notes that the prices of the product under consideration in general should move in tandem with the prices of key raw materials and the domestic industry has been fixing its prices considering these input prices and landed price of imports. Domestic industry has claimed that they are forced to align its prices to the market prices, which are dictated by the prices offered by the foreign producers/exporters from the subject country. Thus, the landed value of subject goods from the subject country is an important factor for determination of domestic prices. The Authority notes that the Domestic Industry is getting affected by the import of subject goods at dumped prices as well as the other Indian producers, who have significantly increased their production and sales during POI as compared to the base year. The domestic Industry and other Indian producers together hold 71% of the total Indian demand and hence the domestic prices are on account of all the players in the market.

Other Known Factors & Non-Attribution Analysis

65. The Authority has examined other factors listed under the Antidumping Rules which could have contributed to injury to the domestic industry for examination of causal link between dumping and material injury to the domestic industry.
66. **Imports from third countries:** The Authority has examined import data of the subject goods as obtained from DGCI&S on transaction-wise basis and notes that almost entirety of imports are from subject country.
67. **Contraction in demand:** The demand for the subject goods has increased. Thus, any decline in demand has not caused injury to the domestic industry.
68. **Trade restrictive practice:** There is no trade restrictive practice which could have contributed to the injury to the domestic industry.
69. **Developments in technology:** The existing technology and process adopted by the domestic industry is comparable with foreign producers as regards production of the final product. The petitioner recently enhanced capacities.
70. **Changes in pattern of consumption:** The pattern of consumption with regard to the product under consideration has not undergone any change. Change in the pattern of consumption is unlikely to contribute to the injury to the domestic industry.
71. **Export performance:** The domestic industry has very insignificant exports, and export is not their target market. Furthermore, segregated information for the domestic operations has been examined for determination of injury, hence, export performance cannot be a cause of injury to the domestic industry.
72. **Productivity of the domestic industry:** The Authority notes that the productivity of the domestic industry has increased. Deterioration in productivity is not a cause of injury to the domestic industry.
73. **Performance of the domestic industry with respect to other products:** The performance of other products being produced and sold by the domestic industry has not affected the assessment made by the Authority of the domestic industry's performance. The information considered by the Authority is with respect to the product under consideration only. It has been argued by other interested parties that Production of O Acid is causing injury to the domestic industry. It is noted in this context that O Acid was transferred to Ofloxacin plant as per statutory regulation. The transfer price of O-Acid has been normatted and taken into account for injury analysis in the present investigation against Ofloxacin and hence injury on account of O Acid cannot be attributed to Ofloxacin. In any case, there is sufficient causal link between the dumping of subject goods by subject country and injury caused to the domestic industry.

FACTORS ESTABLISHING CAUSAL LINK

74. Analysis of the performance of the domestic industry over the injury period shows that the performance of the domestic industry has deteriorated on some parameters due to dumped imports from subject country. Causal link between dumped imports and the injury to the domestic industry is established on the following grounds:
 - i. Volume of dumped imports declined and then again increased in the POI and is significant despite enhancement of capacities by the domestic industry and other Indian producers.
 - ii. Price reduction caused by the dumped imports have forced the domestic industry to reduce its prices;
 - iii. The price depression effect of dumped imports from subject country has resulted in significant increase in financial losses of the domestic industry.

- iv. Financial losses and negative return on capital employed are primarily a result of dumped imports;
- v. The growth of the domestic industry has declined in terms of a number of economic parameters.
- vi. The Authority has determined non-injurious price for the domestic industry. For this purpose the Authority has considered best consumption norms of the raw materials & utilization. It is seen that the price underselling is positive and significant.
- vii. The Authority has segregated and excluded injury suffered by the domestic industry due to other factors, in accordance the provisions of Annexure-III to the Rules.

H. MAGNITUDE OF INJURY AND INJURY MARGIN

75. The non-injurious price of the subject goods produced by the domestic industry as determined by the Authority in terms of Annexure III to the AD Rules has been compared with the landed value of the imports from the subject country for determination of injury margin during the POI and the injury margin so worked out is as under. The Authority has determined NIP for the domestic industry in respect of both Ofloxacin and O-acid. Further, the Authority has carefully examined the transfer price used by the petitioner in determining cost of production, profit and NIP of the PUC. Further, this transfer price adopted by the petitioner has been compared with the NIP of O-Acid determined by the Authority and import price of O-acid into the country. The Authority has considered a transfer price much below actual cost of production of O-Acid incurred by the petitioner, therefore the allegation of enhanced value of captive raw material for ofloxacin production has been duly taken care of.

S.No	Producer/Exporter	NIP	LV	Injury Margin		
		USD/Kg	USD/Kg	USD/Kg	(%)	Range
1	Zhejiang East-Asia Pharmaceutical Co. Ltd	***	***	***	***	15-25
2	Zhejiang Apelo Kangyu Pharmaceutical Co. Ltd	***	***	***	***	5-15
3	Any other	***	***	***	***	25-35

76. It is seen that the injury margin for the subject country is positive and substantial.

I. POST DISCLOSURE COMMENTS

77. The post disclosure submissions have been received from the interested parties. The issues raised therein have already been raised earlier during the investigation and also addressed appropriately. However, for the sake of clarity the submissions by the interested parties are being examined as below:

Submissions of Domestic Industry

78. The Domestic Industry made the following submissions:
 - i. There is no difference in Ofloxacin produced by the Indian industry and the product exported from the subject country, and the production of the petitioner constitutes a major proportion of total Indian production.
 - ii. Constructed normal value has been determined on the basis of non-injurious price determined for the domestic industry. It is submitted that the actual cost of production needs to be considered and not the notional cost for construction of normal value.
 - iii. Imports increased in 2014-15, declined thereafter in 2015-16, and once again increased during the POI. Imports are undercutting the prices of the like article of the domestic industry. Imports have suppressing and depressing effect on the prices of the domestic industry in the market, consequently leading the domestic industry into losses.
 - iv. The performance of the domestic industry in terms of profits, cash flows and return on investments has significantly deteriorated
 - v. The performance of the domestic industry has improved in terms of sales volume, production, capacity utilization, and market share. However, despite this, the performance of the domestic industry significantly deteriorated in terms of profits, cash flows and return on investments.
 - vi. A normal business situation is that profits, cash flows and return on investments improve with the improvement in sales volume, production, capacity utilization, and market share. An abnormal business

- situation is deterioration in profits, cash flows and return on investments with the improvement in sales volume, production, capacity utilization, and market share. The abnormal business situation is created by dumping practices.
- vii. The form of anti-dumping duty should be fixed quantum of anti-dumping duty and the duty should be imposed in terms of US\$.
 - viii. The claim of the interested party is that if the company has sold a product captively, there cannot be a profit or a loss in the product. The argument is grossly misplaced. It has been clarified in this regard that the petitioner has done valuation of all the captive sales of O-Acid consistent with the statutory requirements in the country.
 - ix. The claim that injury has been caused on account of O Acid and the same needs to be segregated is misplaced, it is submitted that the injury has been determined separately for both the products [O Acid and Ofloxacin] as per the records maintained by the company.

Views of the opposing interested parties

79. The submissions of various opposing interested parties are summarized as follows:

- i. The Authority cannot deny an individual dumping margin to the supply chain where the producer is Zhejiang East-Asia Pharmaceutical Co. Ltd. and the exporter is the Respondent herein, i.e., Zhejiang Medicines & Health Products Import & Export Co. Ltd. as both these parties have been cooperative and have participated fully in the present investigations.
- ii. China Chamber of Commerce for Import & Export of Medicines and Health Products (CCCMHPIE), has not been mentioned in the disclosure statement issued as a party to have filled submission in the present matter.
- iii. Treatment of China as NME after December, 2016, is in violation of China's accession protocol. India no longer has legal basis to calculate normal value of Chinese products using non market methodology. The Authority should grant market economy status to china; conduct normal value calculation in accordance with article 2 of AD agreement and apply the data on costs and prices provided by the Company for determination of normal value
- iv. Higher cost has been considered for O-Acid, the raw material. The raw material has been produced by the petitioner and captively consumed for Subject goods and transferred at cost plus 10% which results in a higher cost. The import price of O-Acid should be considered.
- v. The claim of increased exports from China is factually incorrect and false. Rather the imports have shown a decline. There is no increase in imports in absolute terms but a decline of 31%; there is no increase in imports in relation to demand but a decline of 21%; there is no increase in imports in terms of sales of DI but a decline of 61%
- vi. The claims of return on capital employed have been inflated. NIP determined by DA is highly inflated and not based on real situations because as per para 4 of Annexure III of AD rules the elements of cost of production are required to be examined for NIP. A reasonable return (pre-tax) on average capital employed, reasonableness of interest cost may be examined, providing 22% ROCE is incorrect because debt portion of capital employed which attracts 10-12% interest rate is provided at 22%; This in turn results in providing more than 22% return on net worth portion of capital employed; During recession such high return is incorrect. 22% ROCE gives undue advantage and protection to DI. 41% margin on equity cannot be termed as reasonable

Examination by the Authority

80. It is noted that the issues raised at post disclosure stage have already been examined by the Authority in above relevant paragraphs, however for the sake of the clarity of the submissions they are addressed as below:
- i. As regards the cost of raw material, the Authority notes that the transfer price of O Acid based on normatted cost of production of O acid (without any profit margin) has been adopted by the Authority.
 - ii. As regards the calculation of NIP, the Authority notes that NIP and cost of production has been determined as per Annexure III of Custom Notification No. 15/2011-customs (N.T) dated 1st March 2011 and the provisions of the rules and the uniform practice followed in the Directorate for the calculations.
 - iii. As regards the individual dumping margin to Zhejiang Medicines & Health Products Import & Export Co. Ltd., the Authority reiterates that the response was examined and on examination it is found that they are only the exporters and not the producers of the subject goods. They are exporting to India as well as to other countries. As per appendix 2 details they have exported five consignments to India. The same were procured from various unrelated producers in China and then exported to India. Only one of the producers involved namely Zhejiang East-Asia Pharmaceutical Co. Ltd. has filed response, which is only 9 % of their total exports to India. This is an incomplete response and hence the Authority has decided to not consider M/s Zhejiang Medicines & Health Products Import & Export Co. Ltd for individual dumping margin.

- iv. As regards the segregation of injury assessment of O acid, the Authority clarifies that there are two separate investigations in the directorate of O-acid and another is Ofloxacin, the injury analysis is done separately by the Authority on the basis of the facts of each case.
- v. As regards the claim of the exporters from China, the Authority had sent copies of exporter's questionnaire on market economy treatment (MET) to exporters in China PR. However, no producer/exporter has claimed MET. In view of the above, the Authority considers it appropriate to proceed with para-7 of Annexure I to the Rules for determination of normal value in case of China PR.
- vi. As regards the construction of normal value, the Authority reiterates that the normal value is constructed having regard to para-7 of Annexure-I for the purpose of present investigation, which is also mentioned in para 5 of this Finding. It has been constructed considering optimum consumption of major raw materials as per information provided by the domestic industry, conversion cost, interest, SGA expenses, etc. at the levels allowed for the domestic industry along with a reasonable profit on the cost of production. The cost of raw material been taken based on O-Acid imported from China after the landed value has been duly adjusted for customs duty, cess, landing charges, ocean freight and ocean insurance to arrive at FOB price and then this FOB price of raw material was used for working out CNV.
- vii. The submissions made by China Chamber of Commerce for Import & Export of Medicines and Health Products (CCCMHPIE), were examined and duly considered and appropriately addressed in the Disclosure Statement as well as the present finding.

J. CONCLUSIONS

- 81. After examining the issues raised and submissions made by the interested parties and facts made available before the Authority as recorded in this finding, the Authority concludes that:
 - i. The product under consideration has been exported to India from the subject country below its normal value, resulting in dumping.
 - ii. The Domestic Industry has suffered material injury due to dumping of the product under consideration from the subject country.
 - iii. The material injury has been caused by the dumped imports from the subject country.
 - iv. The fact that other Indian producers are growing at a good pace is also relevant in the context of the investigation. However, except M/s Danopharm Chemicals Pvt. Ltd., no other producer has either supported or opposed the petition. Further the fact that anti dumping duties have been recommended for 3 years on one of the major raw material (O-Acid) at the behest of the Domestic Industry in a separate investigation recently is also relevant for the outcome of this investigation.

K. INDIAN INDUSTRY'S INTEREST & OTHER ISSUES

- 82. The Authority notes that the purpose of anti-dumping duties, in general, is to eliminate injury caused to the Domestic Industry by the unfair trade practices of dumping so as to re-establish a situation of open and fair competition in the Indian market, which is in the general interest of the Country. It is recognized that the imposition of anti-dumping duties might affect the price levels of the downstream products and consequently might have some influence on relative competitiveness of these products. However, fair competition in the Indian market will not be reduced by the antidumping measures, particularly if the levy of the anti- dumping duty is restricted to an amount necessary to redress the injury to the Domestic Industry. On the contrary, imposition of antidumping measures would remove the unfair advantages gained by dumping practices, would prevent the decline of the Domestic Industry and help maintain availability of wider choice to the consumers of the subject goods. Imposition of anti-dumping measures would not restrict imports from the subject country in any way, and therefore, would not affect the availability of the product to the consumers.

L. RECOMMENDATION

- 83. The Authority notes that the investigation was initiated and notified to all interested parties and adequate opportunity was given to the exporters, importers and other interested parties to provide positive information on the aspects of dumping, injury and causal link. Having initiated and conducted the investigation into dumping, injury and the causal link thereof in terms of the AD Rules and having established positive dumping margins as well as material injury to the Domestic Industry caused by such dumped imports, the Authority is of the view that imposition of antidumping duty is required to offset dumping and injury. Therefore, the Authority considers it necessary to recommend imposition of definitive anti-dumping duty on imports of subject goods from the subject country in the form and manner described hereunder for a period of 3 years only.
- 84. Having regard to the lesser duty rule followed by the Authority, the Authority recommends imposition of definitive anti-dumping duty equal to the lesser of margin of dumping and margin of injury, for 3 years from the date of notification to be issued in this regard by the Central Government, so as to remove the injury to the

Domestic Industry. Accordingly, the antidumping duty equal to the amount indicated in Col No.8 of the table below is recommended to be imposed on all imports of the subject goods originating in or exported from the subject country for 3 years.

Duty Table

S.No.	Tariff Item*	Description of Goods	Country of Origin	Country of Export	Producer	Exporter	Amount	UOM	Currency
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)	(7)	(8)	(9)	(10)
1	3004 20 34	Ofloxacin	China PR	China PR	Zhejiang East-Asia Pharmaceutical Co. Ltd	Zhejiang East-Asia Pharmaceutical Co. Ltd	6.86	KG	USD
2	3004 20 34	Ofloxacin	China PR	China PR	Zhejiang Apelo Kangyu Pharmaceutical Company Limited	Zhejiang Apelo Kangyu Pharmaceutical Company Limited	2.58	KG	USD
3	3004 20 34	Ofloxacin	China PR	China PR	Any other combination other than S.N 1 & 2	Any other combination other than S.N 1 & 2	9.48	KG	USD
4	3004 20 34	Ofloxacin	China PR	Any	Any	Any	9.48	KG	USD
5	3004 20 34	Ofloxacin	Any	China PR	Any	Any	9.48	KG	USD

* Custom classification is only indicative and the determination of the duty shall be made as per the description of PUC

85. Landed value of imports for the purpose of this Notification shall be the assessable value as determined by the Customs under the Customs Act, 1962 (52 of 1962) and includes all duties of customs except duties under sections 3, 3A, 8B, 9 and 9A of the said Act.
86. An appeal against the order of the Central Government arising out of this final finding shall lie before the Customs, Excise and Service Tax Appellate Tribunal in accordance with the Customs Tariff Act.

SUNIL KUMAR, Addl. Secy. & Designated Authority